पवित्र लोगों को सिद्ध बनाना

और उसने कितनों को प्रेरित नियुक्त करके, और कितनों को भविष्यद्वक्ता नियुक्त करके, और कितनों को सुसमाचार सुनानेवाले नियुक्त करके, और कितनों को रखवाले और उपदेशक नियुक्त करके दे दिया, जिससे पवित्र लोग सिद्ध हो जाएं, और सेवा का काम किया जाए, और मसीह की देह उन्नति पाए।

इफिसियों 4:11,12

आशीष रायचूर

मुद्रण और वितरणः **ऑल पीपल्स चर्च एवं विश्व सुसमाचार सम्पर्क, बंगलौर**
प्रथम संस्करण : सितंबर 2011

सहायक संपादिकाः शरद्कांत जाकोब वाग्मरे
मुख पृष्ठ एवं ग्राफिक्स डिज़ाइन : करुणा जयरोम, बाईफेथ डिज़ाइन्स

Contact Information:
All Peoples Church & World Outreach,
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617, +91-80-65970617
Email: contact@apcwo.org
Website: www.apcwo.org

इस्तेमाल किए गए बाइबल के संदर्भ पवित्र बाइबल से लिए गए हैं।

निशुल्क वितरण हेतु
इस पुस्तक का विनामूल्य वितरण ऑल पीपल्स चर्च के सदस्यों, सहभागियों और मित्रों के आर्थिक अनुदानों के द्वारा संभव हुआ है। यदि आपने इस निःशुल्क पुस्तक के द्वारा आशीष पाई है, तो हम आपको निमंत्रित करते हैं कि ऑल पीपल्स चर्च की निःशुल्क प्रकाशन सामग्री की छपाई और वितरण में सहायता करने हेतु आर्थिक रूप से हमें योगदान दें। धन्यवाद!

(Hindi book -(Hindi book - Equipping the Saints)

पवित्र लोगों को सिद्ध बनाना

विषयसूचि

	प्रस्तावना	v
1.	परमेश्वर का वर्तमान कदम	01
2.	पवित्र जनों की भूमिका	10
3.	पांच प्रकार के सेवाधिकारियों की भूमिका.	17
4.	आगे बढ़ना	26
5.	शहर व्यापी कलीसिया	35
	प्रार्थना	42

प्रस्तावना

यह पुस्तक उन पांच संदेशों का संकलन है जिन्हें मैंने ऑल पीपल्स चर्च के वार्षिक क्रिश्चियन मिनिस्टर्स कॉन्फ्रेन्स 2008 में प्रचार किया था। यह हमारी सबसे पहली मसीही सेवकों की महासभा थी जिसका आयोजन हमने भारत के बैंगलोर में किया था। इस महासभा का विषय था ***"पवित्र लोगों को सिद्ध बनाना।"***

इन संदेशों को बैंगलोर तथा संपूर्ण भारत देश के पासबानों और मसीही सेवकों के साथ बांटने की ज़रूरत मैंने महसूस की। इसी उद्‌देश्य से इन संदेशों का संकलन, संपादन एव्म प्रकाशन किया गया है। हमें विश्वास है कि कई इसके द्वारा लाभ पाएंगे। यद्यपि ये संदेश मुख्य रूप से पांच प्रकार की सेवा में कार्यरत सेवाधिकारियों के लिए हैं, हमें विश्वास है कि वे विश्वासियों के लिए भी अत्यंत बहुमूल्य सिद्ध होंगे और परमेश्वर की नई बेदारी के प्रति उन्हें जाग्रत करेंगे।

हम परमेश्वर की इस नई बेदारी के लिए तैयार हो जाएं, जिसे विश्वभर के विभिन्न मसीही अगुवों ने 'सन्तों या पवित्र लोगों की बेदारी' का नाम दिया है। पवित्र लोगों का आंदोलन पहले ही आरंभ हो चुका है। हमें तैयार रहना है और आगे बढ़ना है, अन्यथा हम पीछे रह जाएंगे!

परमेश्वर आपको आशीष दे!

पास्टर आशीष रायचूर

1
परमेश्वर का वर्तमान कदम

कि उसने अपनी इच्छा का भेद उस सुमति के अनुसार हमें बताया जिसे उसने अपने आप में ठान लिया था, कि समयों के पूरे होने का ऐसा प्रबन्ध हो कि जो कुछ स्वर्ग में है, और जो कुछ पृथ्वी पर है, सब कुछ वह मसीह में एकत्र करे। उसी में जिसमें हम भी उसी की मनसा से जो अपनी इच्छा के मत के अनुसार सब कुछ करता है, पहले से ठहराए जाकर मीरास बने, ताकि हम जिन्होंने पहले से मसीह पर आशा रखी थी, उसकी महिमा की स्तुति के कारण हों (इफिसियों 1:9–12)।

और सब पर यह बात प्रकाशित करूं कि उस भेद का प्रबन्ध क्या है, जो सब के सृजनहार परमेश्वर में आदि से गुप्त था, ताकि अब कलीसिया के द्वारा, परमेश्वर का नाना प्रकार का ज्ञान, उन प्रधानों और अधिकारियों पर, जो स्वर्गीय स्थानों में है प्रगट किया जाए। उस सनातन मनसा के अनुसार, जो उसने हमारे प्रभु मसीह यीशु में की थी (इफिसियों 3:9–11)।

परमेश्वर पृथ्वी पर कार्य कर रहा है – अपने सनातन उद्देश्यों को प्रगट कर रहा है और कार्यान्वित कर रहा है। वह उन पुरुष और स्त्रियों के द्वारा अपने उद्देश्यों को प्रगट करता है, जो उसकी इच्छा को पूरा करते हैं।

परमेश्वर आज भी पृथ्वी पर कार्य कर रहा है। उसने अपनी योजनाओं और उद्देश्यों को प्रगट करना बन्द नहीं किया है। वह मानवजाति के जीवन में कार्य कर रहा है, वह हमें वहां ले जा रहा है जहां पर वह हमें रखना चाहता है, ताकि समय के पूरे होने पर वह हमें अपनी अति उत्तम रचना के रूप में इकट्ठा करे।

इसलिए मन फिराओ और लौट आओ कि तुम्हारे पाप मिटाए जाए, जिससे प्रभु के सन्मुख से विश्रान्ति के दिन आएं। और वह उस मसीह

यीशु को भेजे जो तुम्हारे लिए पहले ही से ठहराया गया है। अवश्य है कि वह स्वर्ग में उस समय तक रहे जब तक कि वह सब बातों का सुधार न कर ले जिसकी चर्चा परमेश्वर ने अपने पवित्र भविष्यद्वक्ताओं के मुख से की है, जो जगत की उत्पत्ति से होते आए हैं (प्रे.काम 3:19—21)।

जब तक सब बातों को फिर से सुधार न ले, जैसे परमेश्वर चाहता है, तब तक प्रभु यीशु को स्वर्ग में रहना होगा।

यीशु अब तक लौट नहीं आया है, इसका मतलब यह है कि हम इस समय परमेश्वर के पुनर्स्थापन के कार्य में हैं।

परमेश्वर सब वस्तुओं को फिर पुनर्स्थापित कर रहा है, जैसे कि उसने अपने वचन में कहा है।

कलीसिया परमेश्वर के पुनर्स्थापन के कार्य का केन्द्र है, क्योंकि परमेश्वर की यह योजना है कि कलीसिया के द्वारा वह अपनी असीम बुद्धि को प्रगट करे।

कलीसिया के इतिहास पर पुनर्विचार

पवित्र आत्मा के पुनःस्थापित करने वाले कार्य का सिंहावलोकन

➢ **सन 400 से 1400** — अन्धकार युगों के दौरान कलीसिया आत्मिक रीति से निर्बल हो गई।

बेदारी और पुनर्स्थापन

मार्टिन लूथर नामक व्यक्ति के द्वारा सन 1500 के दौरान धर्म सुधार के साथ बेदारी और पुनःस्थापन का कार्य आरंभ हो गया और हम देखते हैं कि परमेश्वर उत्तरोत्तर कलीसिया को पुनःस्थापन की विभिन्न स्थितियों और पहलूओं से ले जाने लगा।

कुछ बेदारियों ने कुछ स्थानों को प्रभावित किया और फिर वे मिट गईं। परंतु कुछ बेदारियां आंदोलन बन गईं और अपने साथ सामर्थ्यपूर्ण

सत्य का पुनःस्थापन और परमेश्वर के ताज़गी भरे कार्य का प्रदर्शन ले आई, जो अंततः कलीसिया में सुधार को ले आई। भले ही संपूर्ण नहीं, परंतु कलीसिया की एक विशाल बहुसंख्या इस सत्य और परमेश्वर के कार्य से प्रभावित हो गई जिसका इस बेदारी के साथ जन्म हुआ था, और उसे कलीसिया का एक निश्चित सुधार कार्य बना दिया।

परमेश्वर ने जिसे आरंभ किया, उसे मनुष्य ने प्रथा में बदल दिया। वर्तमान समय के कई संप्रदायों का जन्म परमेश्वर के वास्तविक आंदोलन में हुआ था। परमेश्वर ने जो आरंभ किया है, उसे व्यवस्था और स्वरूप प्रदान करना गलत नहीं है, फिर भी हमें सावधान रहना है कि कहीं हम पुनःस्थापित सत्य और आत्मा के कार्य के स्थान पर व्यवस्था और स्वरूप को ही अपना देवता न बना लें। यदि हम व्यवस्था और स्वरूप और प्रशासन को ही जिन्हें सत्य और परमेश्वर के कार्य को संभालने के लिए बनाया गया था, महत्व देते हैं, तो अंत में हम अतीत के मृत अवशेष (आत्मिक जीवाश्म) बन कर रह जाते हैं। हमारे पास मात्र सिद्धान्त बचा रह जाता है जिसमें न तो जीवन होता है, न सामर्थ।

परमेश्वर कलीसिया के द्वारा उत्तरोत्तर सत्य को पुनःस्थापित करना और उसके आत्मा की ताज़ी हवा को मुक्त करना जारी रखता है। पुनःस्थापित सत्य नया सत्य नहीं है। यह सत्य पहले से ही पवित्र शास्त्र में था, परंतु उसे देखने के लिए हमने कभी प्रकाशन नहीं पाया! आत्मा की ताज़ी हवाओं का मतलब ऐसा नहीं है कि पवित्र आत्मा बदल रहा है। इसका अर्थ मात्र यह है कि परमेश्वर अपने असीम व्यक्तित्व के नये आयामों को अनुभव करने का हमें अवसर दे रहा है, जिन्हें हमने पहले कभी अनुभव नहीं किया था।

यहां पर कुछ मुख्य आंदोलनों, सच्चाइयों की संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत की गई है जिन्हें पुनःस्थापित किया गया था और उन सम्प्रदायों/संस्थाओं की भी जो उसके फलस्वरूप उत्पन्न हुईं :

- **सन् 1500** – प्रोटेस्टंट बेदारी विश्वास के द्वारा अनुग्रह से उद्धार और सभी विश्वासियों के याजकपन का प्रकटीकरण ले आई।
    - **लूथरन, एपिस्कोपेलियन, प्रेस्बिटेरियन एवं कॉन्ग्रिगेशनल कलीसियाएं स्थापित हुईं।**
- **सन् 1600 – प्यूरिटन बेदारी** के द्वारा जल के बपतिस्मे और राज्य से कलीसिया का अलगाव आदि बातों की समझ प्राप्त हुई।
    - **मेनोनाईट्स, बैप्टिस्ट, और अन्य मौलिक कलीसियाएं स्थापित हुईं।**
- **सन् 1700 – पवित्रता आंदोलन** या बेदारी के द्वारा कलीसिया के पवित्रीकरण तथा कलीसिया के संसार से अलग होने के विषय में समझ प्राप्त हुई।
    - **मेथडिस्ट, नाज़रीन, चर्च ऑफ गॉड, पवित्रता का प्रचार करने वाली कलीसियाएं एवं मण्डलियां स्थापित हुईं।**
- **सन् 1800 – ईश्वरीय चंगाई की बेदारी** के द्वारा भौतिक शरीर के लिए परमेश्वर की चंगाई की सामर्थ का प्रकटीकरण एवं प्रकाशन प्राप्त हुआ।
    - **क्रिश्चियन मिशनरी बेदारी**
- **सन् 1900 – पिन्तेकुस्तीय बेदारी** पवित्र आत्मा का बपतिस्मा और अन्य अन्य भाषाओं में बोलना इन बातों का प्रकाशन ले आया।
    - **पिन्तेकुस्तीय बेदारी – 1900–1940**
        - **असेम्ब्ली ऑफ गॉड, यूनायटेड पेन्टिकॉस्टल, फोर स्क्वेयर, चर्च ऑफ गॉड इन क्राईस्ट।**

- **कैरिस्मैटिक बेदारी – 1950–1970**
  - **नॉनडिनॉमिनेशनल चर्चेस, स्वतंत्र कलीसिया, कैरिस्मैटिक कलीसिया, विश्वास और वचन कलीसिया (फेथ ॲण्ड वर्ड), सेवकों की सहभागिता।**
- **भविष्यद्वक्ता/प्रेरित बेदारी – 1980–1990**
  - **भविष्यद्वक्तावादी कलीसियाएं एवं नेटवर्क, प्रेरितवादी कलीसियाएं एवं नेटवर्क**

➢ **2000** – पिन्तेकुस्तीय बेदारी के बाद कलीसिया में कई प्रकार की स्पष्ट बेदारियां आई जिन्होंने मसीह की कलीसिया को परमेश्वर में एक ऊंचे स्तर की ओर उठाया। पांच प्रकार की सेवकाइयां – सुसमाचार प्रचारक (सन् 1950 में), पासबान (सन् 1960 में), शिक्षक (सन् 1970 में), भविष्यद्वक्ता (सन् 1980 में), और प्रेरित (सन् 1990 में) – मसीह की देह में स्थापित की गईं। अब हम परमेश्वर के पंचाग में उस स्थान में हैं जहां पर सन्तों अर्थात् पवित्र लोगों को सेवा के कार्य हेतु तैयार किया और सेवकाई के लिए मुक्त किया जा रहा है।

और उसने कितनों को प्रेरित नियुक्त करके, और कितनों को भविष्यद्वक्ता नियुक्त करके, और कितनों को सुसमाचार सुनानेवाले नियुक्त करके, और कितनों को रखवाले और उपदेशक नियुक्त करके दे दिया, जिससे पवित्र लोग सिद्ध हो जाएं, और सेवा का काम किया जाए, और मसीह की देह उन्नति पाए, जब तक कि हम सब के सब विश्वास, और परमेश्वर के पुत्र की पहचान में एक न हो जाएं, और एक सिद्ध मनुष्य न बन जाएं और मसीह के पूरे डील डौल तक न बढ़ जाएं (इफिसियों 4:11–13)।

परमेश्वर ने पांचों प्रकार के सेवापदों को मसीह की देह में स्थापित किया है।

पांच प्रकार की सेवकाई का उद्देश्य सेवा के कार्य के लिए पवित्र जनों को सिद्ध बनाना है।

हम परमेश्वर की अगली बेदारी के आरंभ में हैं...

◆ सन्तों या पवित्र जनों की बेदारी या बेदारी

पवित्र जनों की बेदारी में हर विश्वासी परमेश्वर के वचन से, आत्मा की सामर्थ से सज्जित होगा, आत्मा के वरदानों में सक्रिय होगा, चिन्ह, चमत्कार और आश्चर्यकर्मो को करेगा और इस प्रकार सेवा का कार्य करेगा।

पांच प्रकार की सेवकाई विश्वासियों के लिए, विश्वासियों की सेवा के लिए दी गई है, विश्वासियों को पांच प्रकार के सेवाधिकारियों की सेवा के लिए नहीं दिया गया है। आज हम कई कलीसियाओं और सेवा संस्थाओं में देखते हैं कि हम पांच प्रकार की सेवा करने वाले सेवाधिकारी इस तरह व्यवहार करते हैं, विश्वासियों से यह अपेक्षा रखते हैं कि वे हमारी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए हैं, उन्हें हमारी कार्यसूची को और हमारे दर्शन को पूरा करना है! पवित्र जनों की बेदारी में ये बातें दूर हो जाएंगी।

अब "एकाधिकार" (वदम.उंद तउल) की बात नहीं रहेगी। प्रभु की सेना वह सेना होगी जिसमें कई हज़ारों और लाखों पवित्र जन (विश्वासी) होंगे, जो सेवा का काम करने के लिए तैयार किए गए हैं। सेनापति और अगुवे तो होंगे, परंतु एक ही "व्यक्ति का बोलबाला" (वदमउंद ीवू) नहीं होगा।

जब पवित्रजनों को तैयार किया जाएगा और सेवा में मुक्त किया जाएगा, तब हम मसीह के देह की उन्नति को देखेंगे – ऐसी उन्नति जो पहले कभी नहीं देखी गई थी।

तब परमेश्वर हम सभों को विश्वास की एकता में और परमेश्वर के पुत्र के ज्ञान में लाएगा। हम मसीह की डीलडौल में बढ़ जाएंगे! आज

मसीही विश्व की ओर देखें, शायद कुछ लोग कहेंगे कि सभी विश्वासियों का विश्वास की एकता में आना असंभव होगा। यदि हम पीछे मुड़कर अन्धकार युगों में देखते और उन दिनों में यह कहते कि सत्य फिर से बहाल किया जाएगा, कि हम पवित्र आत्मा के कार्य को अनुभव करेंगे आदि, तो यह असंभव लगता था। फिर भी देखें, हम कहां हैं! प्रभु ने क्या किया है देखें! इसलिए हमें तैयार रहना है। जो आज असंभव लगता है, वह जल्द ही वास्तविकता बन जाएगा!

तब मसीह ऐसी कलीसिया के लिए लौट आएगा जिसमें न तो कोई दाग होगा, और न झुर्री, वह ऐसी देह के लिए आएगा जहां पर हर सदस्य अपने सही स्थान में हैं, एक साथ जोड़ा गया और हर कोई अपना काम करता हुआ (इफि. 5:27)।

पढ़ने योग्य पुस्तकें :

द डे ऑफ द सेन्ट्स, डॉ. बिल हैमन, 2002

अपॉसल्स, प्रॉफेट्स ॲण्ड द कमिंग मूव्हज़ ऑफ गॉड, डॉ. बिल हैमन, 1997

पवित्र लोग (विश्वासी) महत्वपूर्ण हैं!

हमें समझना है कि पवित्र लोग (विश्वासी) परमेश्वर के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं!

परमेश्वर की विरासत पवित्र लोग हैं

और तुम्हारे मन की आंखें ज्योतिर्मय हों, कि तुम जान लो कि उसके बुलाने से कैसी आशा होती है, और पवित्र लोगों में उसकी मीरास की महिमा का धन कैसा है (इफि. 1:18)।

यह कैसा अद्भुत विचार है! परमेश्वर पवित्र लोगों में अपनी ‘विरासत’ देखता है। पवित्र लोग उसकी बहुमूल्य सम्पत्ति हैं!

परमेश्वर अपने पवित्र लोगों में महिमा पाएगा

यह उस दिन होगा, जब वह अपने पवित्र लोगों में महिमा पाने, और सब विश्वास करनेवालों में आश्चर्य का कारण होने को आएगा; क्योंकि तुमने हमारी गवाही की प्रतीति की (2 थिस्सल 1:10)।

पवित्र लोग आने वाले राज्य में राज करेंगे

जल्द ही, निकट भविष्य में, इस संसार के राज्य प्रभु यीशु मसीह की प्रभुता में आएंगे। उसके राज्य का अंत न होगा (दानिय्येल 2:44ब; प्र. वाक्य 11:15ब)। दिलचस्प बात यह है कि राज्य पवित्र लोगों को दिया जाएगा। विश्वासी परमेश्वर के राज्य का शासन और अधिकार चलाएंगे! परमेश्वर ने अपने लोगों के लिए ऐसी महत्वपूर्ण भूमिका तैयार की है!

परन्तु परमप्रधान के पवित्र लोग राज्य को पाएंगे, और युगानयुग उसके अधिकारी बने रहेंगे। तब राज्य और प्रभुता और धरती पर के राज्य की महिमा, परमप्रधान ही की प्रजा अर्थात् उसके पवित्र लोगों को दी जाएगी, उसका राज्य सदा का राज्य है, और सब प्रभुता करनेवाले उसके अधीन होंगे और उसकी आज्ञा मानेंगे (दानिय्येल 7:18,27)।

क्या तुम नहीं जानते कि पवित्र लोग जगत का न्याय करेंगे? इसलिए जब तुम्हें जगत का न्याय करना है, तो क्या तुम छोटे से छोटे झगड़ों का भी निर्णय करने के योग्य नहीं? (1 कुरि. 6:2)।

पवित्र लोग महत्वपूर्ण हैं!

पांच प्रकार की सेवाओं में सेवारत सेवाधिकारी होने के नाते, हमें परमेश्वर के लोगों के लिए परमेश्वर की मनसा जान लेने की आवश्यकता है, अर्थात पवित्र लोगों के लिए। हमें परमेश्वर के लोगों को उसी तरह बहुमूल्य समझना है, जैसे परमेश्वर उन्हें बहुमूल्य समझता है। परमेश्वर की सर्वोच्च योजना को परिपूर्ण करने हेतु हमें पवित्र लोगों को उपयोग करने, सशक्त बनाने और तैयार करने की आवश्यकता है। हमें

परमेश्वर के लोगों के लिए बोझ और गहरा प्रेम होना चाहिए – वही प्रेम जो परमेश्वर के मन में उसके लोगों के लिए है। परमेश्वर का प्रेम अनुचित प्रेम नहीं है – जो पाप को नज़रअन्दाज़ करता है, जो निर्बलता को दूर नहीं करता, आदि। बल्कि परमेश्वर का प्रेम "मज़बूत प्रेम" है, ऐसा प्रेम जो बना रहता है, वह प्रेम जिसकी कोई सीमा नहीं है, पिता का प्रेम जो नाश न करते हुए ताड़ना देता है (इब्रानियों 12:5–11)। यह ऐसा प्रेम है जो धीरजवंत, दयालु है, सब बातों पर भरोसा करता है, और फिर भी पाप में आनंदित नहीं होता (1 कुरि. 13:4–8)। जब हम पवित्र जनों की सेवा करते हैं, तो यही प्रेम हमें प्रेरित करने पाए (2 कुरि. 5:13–14)।

"पवित्र लोगों को सिद्ध बनाने" के विषय पर हमारी चर्चा जारी रखते हुए, हमें पवित्र लोगों की बेदारी में पवित्र जनों की और पांच प्रकार के सेवाधिकारियों की भूमिका को समझना होगा। पांच प्रकार की सेवा में कार्यरत सेवाधिकारी परमेश्वर की नई बेदारी में कैसे आगे बढ़ सकते हैं? पवित्र लोगों की बेदारी किस प्रकार शहरव्यापी कलीसिया को और शहर के परिवर्तन को प्रभावित कर सकती है? इन कुछ बातों पर हम आने वाले अध्यायों में अपना ध्यान केन्द्रित करेंगे।

2
पवित्रजनों की भूमिका

परमेश्वर की वर्तमान बेदारी में और पवित्र जनों (विश्वासियों) की सेवकाई में हमें पवित्र जनों की भूमिका समझने की आवश्यकता है।

हर विश्वासी सेवक है

परंतु हममें से हर एक को मसीह के दान के परिमाण से अनुग्रह मिला है। और उसने कितनों को प्रेरित नियुक्त करके, और कितनों को भविष्यद्वक्ता नियुक्त करके, और कितनों को सुसमाचार सुनानेवाले नियुक्त करके, और कितनों को रखवाले और उपदेशक नियुक्त करके दे दिया, जिससे पवित्र लोग सिद्ध हो जाएं, और सेवा का काम किया जाए, और मसीह की देह उन्नति पाए (इफिसियों 4:7,11,12)।

हर एक विश्वासी को अनुग्रह और कुछ वरदान दिए गए हैं जो प्रभु ने उनके जीवनों में रखे हैं। पांच प्रकार की सेवा करने वाले सेवकों को तैयार करने की ज़िम्मेदारी सौंपी गई है, ताकि पवित्र लोग सेवा का कार्य कर सकें।

जहां तक बाइबल की बात है, हर एक विश्वासी सेवक है और उसे सेवा का काम करना है। सेवकाई केवल पांच प्रकार के सेवकों के लिए नहीं है।

क्योंकि जैसे हमारी एक देह में बहुत से अंग हैं, और सब अंगों का एक ही सा काम नहीं, वैसा ही हम जो बहुत हैं, मसीह में एक देह होकर आपस में एक दूसरे के अंग हैं। और जबकि उस अनुग्रह के अनुसार जो हमें दिया गया है, हमें भिन्न–भिन्न वरदान मिले हैं, तो जिसको भविष्यद्वाणी का दान मिला हो, वह विश्वास के परिमाण के अनुसार भविष्यद्वाणी करे (रोमियों 12:4–6)।

यह सच है कि सभी विश्वासियों के **समान** कतर्व्य नहीं हैं, परंतु यह स्पष्ट है कि सभी विश्वासियों को मसीह की देह में **कुछ** कार्य सौंपे गए हैं। हम में से हर एक को वरदान दिए गए हैं, जो परमेश्वर द्वारा हमें दिए गए अनुग्रह के अनुसार और जो विशिष्ट कतर्व्य हमें मसीह की देह में पूरे करने हैं, उनके अनुसार हैं।

हर एक विश्वासी को इस सच्चाई के प्रति जागृत रहना है कि उनके पास एक सेवकाई है। परमेश्वर ने पहले से वरदानों, अनुग्रह के दानों को उन्हें दिया है और हर एक विश्वासी को एक या दो कार्य सौंपे हैं।

विश्वासियों को स्थानीय कलीसिया में सेवकाई के अवसर दिए जाने चाहिए

जिसको जो वरदान मिला है, वह उसे परमेश्वर के नाना प्रकार के अनुग्रह के भले भण्डारियों के समान एक दूसरे की सेवा में लगाए। यदि कोई बोले, तो ऐसा बोले, मानो परमेश्वर का वचन है; यदि कोई सेवा करे, तो उस शक्ति से करे जो परमेश्वर देता है; जिससे सब बातों में यीशु मसीह के द्वारा, परमेश्वर की महिमा प्रगट हो। महिमा और समराज्य युगानुयुग उसी की है। आमीन (1 पतरस 4:10,11)।

परमेश्वर अपने पवित्र लोगों को वरदान एवं अनुग्रह के दान देता है, यह इसलिए ताकि ये वरदान एक दूसरे की सेवा के लिए उपयोग किए जा सकें। इसलिए विश्वासियों को स्थानीय कलीसिया में विभिन्न स्तरों पर अपने अपने वरदानों का उपयोग करने का अवसर प्रदान किया जाना चाहिए। यह सच है कि यह इस तरह किया जाना चाहिए जिससे साथ ही साथ उनमें मसीह चरित्र का विकास हो और उन्हें परिपक्वता प्राप्त हो, ताकि वे अधिकारियों की उचित अधीनता में रहें और स्थानीय कलीसिया के दर्शन और निर्देशन के अनुसार चलें। परंतु मैंने यह देखा है कि हमारी अधिकतर कलीसियाएं ऐसे लोगों से भरी हैं जिन्हें उनके वरदानों को ढूंढ़ निकालने और उनका उपयोग करने

हेतु उत्साहित नहीं किया गया है; या ऐसे लोगों से ये कलीसियाएं भरी हैं जो अपने वरदान और अनुग्रह के दानों को जानते हैं, परंतु अवसर के अभाव में उनका उपयोग नहीं कर पाते हैं। सामान्य तौर पर, बहुत कम हैं जो "प्रशिक्षण पा रहे हैं" या चरित्र विकास, परिपक्वता, और अधीनता जैसे विषयों को लेकर रुके हुए हैं, और बहुसंख्य ऐसे हैं जो निष्क्रिय हैं और किसी प्रकार का काम नहीं कर रहे हैं।

इसे बदलने की ज़रूरत है। स्थानीय कलीसिया केवल उसी अनुपात में सचमुच कार्य कर रही है (या सक्रिय है) जितना प्रतिशत उस कलीसिया में सक्रिय है और अपनी सेवकाइयों में कार्यरत है। जिस सौ लोगों की कलीसिया में केवल बीस लोग अपने वरदानों को और कर्तव्य के स्थान को समझ पाए हैं और सक्रिय रूप से सेवा कर रहे हैं, वह स्थानीय कलीसिया बीस प्रतिशत कार्य कर रही है और उस कलीसिया में अस्सी प्रतिशत कर्तव्य रहित, अकर्मण्य और निष्क्रय लोग हैं।

जिससे सारी देह हर एक जोड़ की सहायता से एक साथ मिलकर, और एक साथ गठकर उस प्रभाव के अनुसार जो हर एक भाग के परिमाण से उसमें होता है, अपने आप को बढ़ाती है, कि वह प्रेम में उन्नति करती जाए (इफिसियो 4:16)।

जब हर एक भाग अपने हिस्से का काम पूरा करेगा, तब देह की उन्नति होगी और वह मसीह के समान परिपक्वता में, प्रेम में उन्नति करेगी! मसीह की देह के हर विश्वासी के सक्रिय होने और अपनी सेवकाई में कार्य प्रवण होने के लिए यह कारण पर्याप्त है।

कुछ विश्वासियों को बाजारों में सेवा (सुसमाचार सुनाने के लिए) के लिए बुलाया गया है

कुछ विश्वासियों के लिए, उनकी सेवकाई का मंच स्थानीय कलीसिया का पुलपिट नहीं, परंतु गिरजाघर के बाहर का व्यापार क्षेत्र

है – कारोबार, सरकारी कार्यालय, शिक्षा, मनोरंजन, कला, संचार माध्यम, खेलकूद आदि।

हमें समझना है कि सेवकाई वहां होती है जहां लोग होते हैं – स्थानीय कलीसिया में और बाहर भी। कई विश्वासियों को स्थानीय कलीसिया के बाहर अपनी सेवकाई करने हेतु वरदान और अनुग्रह दिए जाएंगे। इसका अर्थ यह नहीं है कि उनकी सेवकाई स्थानीय कलीसिया से जुड़ी हुई नहीं है। स्थानीय कलीसिया वह स्थान होगा जहां पर उन्हें तैयार किया जाता है और समर्थ बनाया जाता है। स्थानीय कलीसिया वह स्थान होगा जहां पर ऐसे विश्वासियों को पोषण, ताज़गी, परामर्श, अभिदिशा आदि प्राप्त होंगे। परंतु उनकी सेवकाई का प्राथमिक क्षेत्र स्थानीय कलीसिया के बाहर होगा – बाहर की दुनिया में, बाज़ार में।

वे व्यावसायिक, व्यापारिक, राजनीतिज्ञ, और शिक्षाविद् हो सकते हैं। वे बाजारों में कलीसियाएं, प्रार्थना समूह, और सुसमाचार सभाएं चला सकते हैं।

यरूशलेम के विश्वासी जो सताव के कारण तितर–बितर हो गए थे, उन्होंने बाहर जाकर ऐसे क्षेत्रों में मसीह का प्रचार किया जहां पर प्रेरित और अगुवे अब तक नहीं गए थे (प्रे.काम 8,11)। नए गांवों और शहरों में सुसमाचार प्रचार किया गया; और सामान्य विश्वासियों ने कलीसियाएं स्थापित की! भूमि तैयार हो जाने के बाद, यरूशलेम के प्रेरितों ने उस कार्य को मज़बूत बनाने हेतु लोगों को भेजा।

यह आज भी हो सकता है। पवित्र लोगों की बेदारी में, विश्वासियों को परमेश्वर अपने राज्य के प्रचार और प्रसार के लिए ऐसे स्थानों में उपयोग करेगा जहां पर "पूर्णकालीन सेवकाई" में सेवारत सेवक भी प्रत्यक्ष प्रवेश नहीं पा सकते। परंतु, इसका अर्थ यह होगा कि हम कार्य की अपनी समझ को और बाज़ार में हमारी मसीही भूमिका को बदल

दें। इस विषय पर अधिक जानकारी के लिए पढ़ें "काम के प्रति बाइबल आधारित रवैया", ऑल पीपल्स चर्च का विनामूल्य प्रकाशन।

विश्वासी पवित्र आत्मा की अलौकिक सामर्थ में चलने लगेंगे और उस सामर्थ को प्रगट करेंगे

पांच प्रकार की सेवा में कार्यरत सेवाधिकारिओं के समान, विश्वासी पवित्र आत्मा की सामर्थ में चलने लगेंगे, और अलौकिक सामर्थ को प्रगट करेंगे और पवित्र आत्मा के वरदानों में कार्य करेंगे, आदि।

मैं तुमसे सच सच कहता हूं कि जो मुझ पर विश्वास रखता है, ये काम जो मैं करता हूं वह भी करेगा, वरन् इनसे भी बड़े काम करेगा, क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूं (यूहन्ना 14:12)।

यीशु की यह इच्छा थी कि सभी युगों के विश्वासी उन चिन्हों और चमत्कारों और आश्चर्यकर्मों को करें जो उसने यहां पृथ्वी पर रहते हुए किए। यीशु ने कभी यह नहीं कहा कि चिन्ह, चमत्कार आश्चर्यकर्म केवल प्रारम्भिक कलीसिया तक सीमित थे। सभी विश्वासियों के लिए उसकी यह पूर्ण इच्छा थी कि वे पिता के कामों को करें और जीवनों को छू लें, परमेश्वर के प्रेम को प्रदर्शित करें और उसकी महिमा करें।

आत्मा के नौ वरदान (1 कुरि. 12:4–11) केवल पांच प्रकार के सेवा पदों में कार्यरत सेवकों के लिए ही नहीं, परंतु सभी विश्वासियों के लिए उपलब्ध हैं।

पवित्र जनों की बेदारी में, हम देखेंगे कि विश्वासी बड़े पैमानों पर परमेश्वर पिता के कामों को कर रहे हैं और चिन्ह, चमत्कार और आश्चर्यकर्म के द्वारा आत्मा के वरदानों को प्रगट करेंगे! यह एक विश्वासी का मानक होगा।

जो विश्वासी पिता के कामों को करेंगे और आत्मा के वरदानों को प्रगट करेंगे, वे अजीब नहीं होंगे। अजीब वे होंगे जो चिन्ह, चमत्कार और आश्चर्यकर्मों को प्रगट नहीं करते!

कुछ विश्वासी इस “संसार” के पद और कार्य को सम्भालते हुए भी पांच प्रकार के सेवाकार्यों को कर सकते हैं

इसके लिए तैयार हो जाए! पवित्र शास्त्र में कहीं यह नहीं बताया गया है कि जिसे पांच प्रकार के सेवा कार्य के लिए बुलाया गया है (अर्थात, प्रेरित, भविष्यद्वक्ता, पासबान, शिक्षक या सुसमाचार प्रचारक) वह “पूर्णकालीन सेवकाई में” रहे।

पौलुस प्रेरित था, फिर भी वह तम्बू बनाने के कारोबार में लगा हुआ था, कम से कम अपने जीवन के कुछ समय के लिए। इससे वह अपनी पांच प्रकार की सेवा बुलाहट के लिए अयोग्य सिद्ध नहीं हुआ।

पवित्र जनों की बेदारी में हम प्रेरितों, भविष्यद्वक्ताओं के उदय को देखेंगे और उन लोगों के भी जो पांच प्रकार के सेवाकार्य में कार्यरत रहते हुए भी बाजार के स्थान में व्यापार, राजनीति, कला, मनोरंजन, शिक्षा आदि क्षेत्र में कार्यरत हैं।

व्यक्तिगत विश्वासियों के माध्यम से परमेश्वर जो मुक्त करता है उसमें लिंग और उम्र की बाधा नहीं है

कि परमेश्वर कहता है, कि अन्त के दिनों में ऐसा होगा, कि मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों पर उंडेलूंगा और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियां भविष्यद्वाणी करेंगी और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे, और तुम्हारे पुरनिए स्वप्न देखेंगे। वरन् मैं अपने दासों और अपनी दासियों पर भी उन दिनों में अपने आत्मा में से उंडेलूंगा, और वे भविष्यद्वाणी करेंगे (प्रे.काम 2:17,18)।

पवित्र आत्मा का उण्डेला जाना बिना उम्र भेद और लिंग भेद के सब लोगों के लिए है। पवित्र जनों की बेदारी में हम इसे बड़े पैमाने पर होते हुए देखेंगे। जवान लोग, जो नवयुवा अवस्था में हैं, वे भी प्रचार और भविष्यद्वाणी करेंगे, मसीह सदृश्य चरित्र को प्रगट करेंगे और आश्चर्यकर्म, चिन्ह और चमत्कार करेंगे। यह एक आम घटना होगी। जिन बातों को सीखने में पुरानी पीढ़ी को सालों लग गए, उन्हें युवा पीढ़ी तुरंत सीख लेगी। ये पिछली पीढ़ियों की बुनियाद पर निर्माण करेंगे। जवान और बूढ़े, स्त्री और पुरुष बड़े उत्साह, बुद्धिमानी और जुनून के साथ अपने जीवनों में परमेश्वर की बुलाहट को पूरा करेंगे।

3
पाँच प्रकार के सेवाधिकारियों की भूमिका

पवित्र जनों की बेदारी के उदय से पांच प्रकार के सेवाधिकारियों की भूमिका में परिवर्तन होगा। पांच प्रकार की सेवा में कार्यरत सेवाधिकारियों के नाते हम परिपक्वता के स्थान पर लाए जाएंगे और अपने मूल कार्य पर अपना ध्यान केन्द्रित करने हेतु स्वतंत्र किए जाएंगे – सेवा के कार्य के लिए पवित्र लोगों को तैयार किया जाएगा ताकि मसीह की देह की उन्नति हो।

पांच प्रकार के सेवाधिकारी होने के नाते हमारी भूमिका

हमें यह समझना है कि पांच प्रकार के सेवाधिकारियों का कार्य विश्वासियों के लिए निम्नलिखित बातों का प्रबंध करना है :

विश्वासियों को परिपक्वता के स्थान में – मसीह की समानता में लाना

सेवकाई में हमारा लक्ष्य लोगों का मात्र मनोरंजन करना या उन्हें शिक्षा देना नहीं है परंतु परिपक्वता के स्थान में – मसीह की समानता में लाना है – चरित्र में और सेवकाई में भी।

परमेश्वर का उद्देश्य यह है कि हम उसके पुत्र यीशु मसीह के स्वरूप में बदल जाएं (रोमियों 8:29)। हमें मसीह की समानता के पूर्ण डीलडौल तक बढ़ना है – सारी बातों में उसके समान बनना है (इफिसियों 4:13,15)।

प्रेरित पौलुस का मिशन कथन इस प्रकार था : “उसका प्रचार करके हम हर एक मनुष्य को जता देते हैं, और सारे ज्ञान से हर एक मनुष्य को सिखाते हैं कि हम हर व्यक्ति को मसीह में सिद्ध करके उपस्थित करें। और इसी के लिए मैं उसकी उस शक्ति के अनुसार जो

मुझ में सामर्थ के साथ प्रभाव डालती है तन मन लगाकर परिश्रम भी करता हूं" (कुलु. 1:28,29)। सेवकाई में हमारा कार्य इसी के अनुसार होना चाहिए, जो है लोगों को मसीह में परिपक्व बनाकर प्रस्तुत करना

विश्वासियों को परमेश्वर के वचन में तैयार करना – वर्तमान सत्य, पुनर्स्थापित सत्य

इफिसुस के प्राचीनों को अंतिम बात कहते हुए, पौलुस ने कहा : "और अब मैं तुम्हें परमेश्वर को, और उसके अनुग्रह के वचन को सौंप देता हूं, जो तुम्हारी उन्नति कर सकता है, और सब पवित्रों में साझी करके मीरास दे सकता है" (प्रे.काम 20:32)। परमेश्वर का वचन लोगों की उन्नति करने हेतु समर्थ है। परमेश्वर का वचन बालकों को परिपक्व बना कर उन्हें बेटे और बेटियां बनाता है जिन्हें मिरास सौंपी जा सकती है। पांच प्रकार के सेवाधिकारी होने के नाते, हमें विश्वासियों को परमेश्वर के वचन में दृढ़ बना कर उन्हें मिरास (विरासत) की ओर लाना है – उस सारे सत्य में जो मसीह की देह को लौटाया गया है।

जो प्रकाशन हमने स्वयं व्यक्तिगत रीति से पाया है, उसके अलावा और प्रकाशन हम दूसरों को नहीं दे सकते। जिस सत्य को हमने अनुभव नहीं किया है, उसे हम नहीं दे सकते। इसलिए पांच सेवाधिकारियों के समक्ष यह चुनौती है कि हम वर्तमान सत्य का ज्ञान रखें। अन्धा अन्धे को मार्ग नहीं दिखा सकता (लूका 6:39)। यदि हम ताज़ा प्रकाशन और ज्ञान नहीं पाते, और परमेश्वर पृथ्वी पर जो कुछ कर रहा है उसके प्रति अज्ञान रहते हैं, तो हम परमेश्वर के लोगों को परमेश्वर की वर्तमान बेदारी में अगुवाई नहीं कर पाएंगे।

विश्वासियों को मसीह की देह में उनकी बुलाहट, स्थान और कर्तव्य की समझ के निकट लाना। यह प्रकाशन दें कि हर विश्वासी सेवक है

यह सच है कि सभी अंगों के समान कर्तव्य नहीं हैं, फिर भी यह अत्यंत आवश्यक है कि हम इस बात को समझें कि सभी विश्वासियों को मसीह की देह में कुछ समान कर्तव्य पूरे करना है (रोमियों 12:4)। विश्वासियों को उनके सदस्यत्व के कार्य को खोज निकालने हेतु और पूरा करने हेतु सक्रिय बनाया जाना चाहिए। पांच प्रकार के सेवाधिकारियों के नाते, हमारी ज़िम्मेदारी हर विश्वासी को देह में उसकी सेवकाई खोजने और पूरी करने हेतु प्रोत्साहित करना है।

विश्वासियों को अलौकिक बातों में सिद्ध बनाना, ताकि वे परमेश्वर की सामर्थ को प्रगट कर सकें, पिता के कार्यों को कर सकें

प्रभु यीशु सभी विश्वासियों के लिए यह चाहता है कि वे परमेश्वर की सामर्थ को प्रगट करें और पिता के कामों को करें – आश्चर्यकर्म, चंगाइयां, चिन्ह और चमत्कार (यूहन्ना 14:12; मरकुस 16:17,18)।

आधुनिक कलीसिया ने चिन्ह और चमत्कारों और सामर्थ के कामों के महत्व को हटा कर रख दिया है और बुद्धिवाद, विशाल संस्था और अन्य कई बातों को महत्व दिया है, जिन्हें स्वाभाविक मनुष्य द्वारा पूरा किया जा सकता है।

हमें उस आदेश की ओर लौटना है जो यीशु ने कलीसिया को दिया – उन कामों को करना जो उसने किए और उससे भी बड़े बड़े काम।

पिता के कामों को करने के महत्व को समझें। (आश्चर्यकर्म, चिन्ह और चमत्कार) :

- यीशु ने कहा कि पिता के काम पुराने नियम के महानतम भविष्यद्वक्ताओं की गवाही से बड़े गवाह हैं (यूहन्ना 5:36)।

- पिता के काम उस सन्देश से अधिक महत्वपूर्ण थे जिनका यीशु ने प्रचार किया, इन कामों ने उसके मसीह होने को प्रमाणित किया। वस्तुतः, उसने कहा कि यदि वह आश्चर्यकर्म नहीं करता, तो हमें यह विश्वास करने की ज़रूरत नहीं है कि उसने क्या कहा! (यूहन्ना 10:24,25,37,38)।
- फिलिप्पुस के लिए यीशु ने फिर एक बार उन कामों की ओर संकेत किया जिन्हें वह कर रहा था, यह प्रमाणित करने के लिए कि वह सचमुच पिता की ओर से था (यूहन्ना 14:8–11)।
- जब यूहन्ना बपतिस्मा करने वाले ने यीशु के विषय में सन्देह किया, तब प्रभु ने फिर एक बार उन आश्चर्यकर्मों की ओर संकेत किया जिन्हें वह इस बात के प्रमाण के रूप में कर रहा था कि वह सचमुच मसीह है (मत्ती 11:1–5)।

पांच प्रकार के सेवाधिकारी होने के नाते, हमें स्वयं अलौकिक बातों को प्रगट करने हेतु आगे बढ़ना है। हमें पवित्र लोगों को भी आश्चर्यकर्मों, चिन्ह और चत्मकारों को प्रगट करने हेतु तैयार करने की ज़रूरत है।

कलीसियाओं को शिशु केन्द्रों (नर्सरीज़) से बदलकर पवित्र लोगों को तैयार करने वाले और कार्य सौंपने वाले केन्द्र बनना है

यह दुख की बात है, परंतु सत्य है कि हमारी कई कलीसियाएं रविवार की सुबह कार्यरत शिशु केन्द्र बनकर रह गई हैं जहां पर हम विश्वासियों को दुलारते हैं, उन्हें आत्मा में तैयार नहीं करते और न ही हम उन्हें क्रूस के बलवान सिपाही बनाते हैं! अब समय आ गया है कि हमारी स्थानीय कलीसियाएं ऐसे स्थानों में परिवर्तित कर दिया जाएं जहां विश्वासियों को कलीसिया में और संसार में उनकी परमेश्वर द्वारा नियुक्त सेवकाइयों के लिए तैयार किया जाए और मुक्त किया जाए।

स्थानीय कलीसियाओं के पास विश्वासियों को तैयार करने वाली प्रणालियां और प्रक्रियाएं होनी चाहिए।

विश्वासियों को आत्मा के नए आयामों में ले चलें

प्रभु यीशु जब इस पृथ्वी पर था, तब उसके पास बेपरिमाण आत्मा था (यूहन्ना 3:34)।

अब तक हमने जो अनुभव किया है उससे अधिक पवित्र आत्मा के बड़े पैमाने हैं।

जहां आज हम हैं उसकी तुलना में, हमें आत्मा में और गहराई में और आगे जाने की ज़रूरत है।

पवित्र आत्मा की सामर्थ से परमेश्वर का राज पृथ्वी पर आगे बढ़ता है (जकर्याह 4:6; मत्ती 12:28)।

आत्मा के अभिषेक और आयाम हैं जिनकी विश्वासियों को बाज़ारों में और संसार में उनकी बुलाहट के लिए आवश्यकता है – हम पांच प्रकार के सेवाधिकारियों को इसके लिए उनकी सहायता करने की ज़रूरत है (यशायाह 11:1,2)।

संचरना और प्रशासन प्रदान करना

पवित्र लोगों की बेदारी में, पांच प्रकार के सेवाधिकारियों को वास्तव में महत्वपूर्ण कार्य करने हेतु मुक्त किया जाएगा, अर्थात, पवित्र लोगों को सेवा के कार्य के लिए सिद्ध बनाना या तैयार करना। उन्हें उत्तम रीति से अपने कार्य को जारी रखना है। पांच प्रकार के सेवा कार्यों के लिए और लोगों की आवश्यकता होगी। प्रेरितों की अगुवाई और देखरेख, भविष्यद्वक्ता की अंतर्दृष्टि और निर्देश, पासबान की देखभाल और सुधार, शिक्षकों का पूर्ण शिक्षा प्रदान करना और मज़बूत बनाना, और सुसमाचार प्रचारकों का लोगों को इकट्ठा कर प्रेरित करना आदि बातों की आवश्यकता होगी।

प्रेरित

प्रेरितों को जिस कार्य को करने के लिए बुलाया गया है – नींव डालने, ढांचा तैयार करने और स्वर्गीय नमूने के अनुसार रचना तैयार करने – उस कार्य को करने हेतु स्वर्ग से नक्शा प्राप्त करना होगा। प्रेरित विशिष्ट सेवकाई के लिए परमेश्वर द्वारा दिया गया नक्शा प्रस्तुत करेंगे। कुछ ऐसे प्रेरित होंगे जिनके पास सुसमाचार पहुंचाने हेतु समाज या भौगोलिक स्थानों के विशिष्ट क्षेत्रों को खोलने की कुंजियां (योजनाएं) होगी। कुछ ऐसे प्रेरित होंगे जिनके पास उनके शहरों या प्रान्तों में परिवर्तन लाने हेतु दर्शन और परमेश्वर की अभिदिशा होगी।

भविष्यद्वक्ता

ऐसे भविष्यद्वक्ताओं का उदय होगा जो अपनी अपनी भविष्यद्वाणियों के द्वारा मृत दर्शनों को पुनर्जीवित करेंगे, परमेश्वर की ओर से 'इस समय' के लिए वचन प्राप्त करेंगे, प्रेरितों द्वारा प्रस्तुत किए गए दर्शनों और योजनाओं को अमल में लाने हेतु बल प्रदान करेंगे (एज्रा 4:24; 5:1,2)।

शिक्षक

हमें मज़बूत अभिषिक्त शिक्षकों की अखण्डित सेवकाई की आवश्यकता होगी जो पवित्र लोगों को सम्पूर्ण शिक्षा प्रदान करेंगे, उन्हें उन्नति प्रदान करेंगे, परिपक्व और सिद्ध बनाएंगे।

पासबान

हम ऐसे पासबानों को देखेंगे जो परमेश्वर के मन के लायक हैं (यिर्मयाह 3:15)। जो परमेश्वर के पितृत्व की गहरी समझ के साथ और परमेश्वर के परिवार के लिए बोझ के साथ परमेश्वर के भवन में पवित्र लोगों का पालन पोषण करेंगे और उन्हें मज़बूत बनाएंगे।

सुसमाचार प्रचारक

अभिषिक्त सुसमाचार प्रचारकों का उदय होगा जो फसल को इकट्ठा करेंगे और इस कार्य को करने हेतु विश्वासियों को तैयार करेंगे।

स्थानीय कलीसिया निश्चित स्थान में परमेश्वर का भवन बनी रहेगी (1 तीमु. 3:15)। हर विश्वासी अब भी स्थानीय कलीसिया का समर्पित एवं ज़िम्मेदार सदस्य होगा। वे अब भी मसीह की आत्मिक देह में स्थानीय मण्डली का महत्वपूर्ण भाग बन कर अपनी सदस्यता को पूरा करेंगे। वे स्थानीय कलीसिया में अब भी अपने दसवांश और दान देंगे। परमेश्वर के लोगों के मध्य अब भी क्रम तथा व्यवस्था होगी (1 कुरि. 14:33,40)। पवित्र लोग "अनुशासनहीन या व्यवस्थारहित" नहीं बनेंगे, अपनी दृष्टि में जो उचित लगता है उसे ही नहीं करेंगे – अपने ही दर्शनों और स्वप्नों के अनुसार नहीं चलेंगे (न्यायियों 17:6; 21:25)।

योएल की पुस्तक में जिस सेना के विषय में लिखा गया है उसके समान, पवित्र लोगों को अपनी पंक्ति में अभियान करना सीखना होगा, अपनी पंक्ति को छोड़ कर न चलना, एक दूसरे को धक्का न देना, और अपनी ही रेखा में चलना होगा (योएल 2:7–8)।

आवश्यक सुधार लाना

पवित्र लोगों की बेदारी की तैयारी करते समय पांच प्रकार के सेवाधिकारियों को कुछ बातों में सुधार लाना होगा।

देह में विश्वासियों के कार्य और स्थान के विषय में हमारी समझ में बदलाव

हमें यह सोचना बंद करना होगा कि केवल पांच प्रकार के सेवाधिकारियों को ही सेवा का कार्य करना है और हर विश्वासी को सेवक के रूप में देखना आरम्भ करना होगा

विश्वासियों के प्रति हमारे रवैये में सुधार

हमें असुरक्षितता, हीनता परमेश्वर के लोगों पर नियंत्रण और प्रभुता करने की इच्छा को त्यागना होगा। हमें मज़बूत अगुवों के रूप में सीना तानकर खड़े रहना होगा जो स्वयं के उदाहरण से अगुवाई करेंगे।

हमारे साथ सेवा करने हेतु विश्वासियों के लिए जगह और अवसर तैयार करना

हमें विश्वासियों को हमारे साथ आने की और हमारे साथ सेवा करने की अनुमति देना होगा, जिस प्रकार पौलुस ने युवा तीमुथियुस को अपने साथ लिया और सुसमाचार के कार्य में पौलुस के साथ सेवा करने की अनुमति दी (फिलिप्पियों 2:19–22)।

हमारी स्थानीय कलीसियाओं में टीम सेवकाई स्थापित करना

“एक ही व्यक्ति सब कुछ करता है” इस नेतृत्वशैली से हटकर हमें अपनी स्थानीय कलीसियाओं में सामुहिक सेवकाई – टीम मिनिस्ट्री को बढ़ावा देने की ज़रूरत है। इन सेवा टीमों में पांच प्रकार के सेवाधिकारी होंगे जो पूर्ण कालीन सेवकाई में हो सकते हैं, उसी तरह पांच प्रकार के सेवाधिकारी जो बाजारों में मुख्य भूमिका निभाएंगे।

बुद्धिमानी और विवेक के साथ मार्गदर्शन करें, रक्षा करें और प्रशासन करें

जब हम विश्वासियों को सेवकाई के लिए उत्साहित करते हैं, तैयार और मुक्त करते हैं, तब हमें परमेश्वर के द्वारा नियुक्त अगुवों के रूप में अपनी ज़िम्मेदारियों को त्यागना नहीं है। हमें बुद्धिमानी एवं विवेक के साथ मार्गदर्शन करना है, रक्षा करना है और प्रशासन करना है। हमें इस प्रकार अगुवाई करना है जिससे सेवा करना सीखते समय विश्वासियों के जीवनों में परिपक्वता और स्थिरता आएगी।

सेवकाई के नए तरीकों के अनुकूल बनना

विभिन्न प्रकार की सेवकाइयां और विभिन्न प्रकार की गतिविधियां हैं – ऐसे तरीके हैं जिसमें परमेश्वर अपने लोगों के द्वारा अपने कार्य को प्रवाहित करेगा (1 कुरि. 12:5,6)। परमेश्वर जिस तरह अपने कार्य को निष्पादन करना चाहता है, उसमें हम परमेश्वर को सीमित नहीं कर सकते। परमेश्वर अपने पवित्र लोगों द्वारा ताज़गी भरे और सेवा करने के नए मार्गों को मुक्त करेगा, नई कल्पनाओं को प्रेरित करेगा, खोए हुओं को सुसमाचार सुनाने के नए मार्गों को तैयार करेगा। ये मार्ग उन मार्गों से विभिन्न हो सकते हैं जिनके हम अभ्यस्त हैं। हमें आनंद के साथ इनका स्वागत करना सीखना है और जो कुछ परमेश्वर अपने पवित्र लोगों के द्वारा आरंभ करता है, उसमें हमें रुकावट नहीं बनना है।

4
आगे बढ़ना

पवित्र लोगों की बेदारी – सेवा का कार्य करने हेतु परमेश्वर के लोगों को सिद्ध होते हुए देखने हेतु परमेश्वर द्वारा बढ़ाया गया कदम – निकट है! पांच प्रकार के सेवाधिकारी होने के नाते, हमें परमेश्वर की इस बेदारी की ओर आगे बढ़ना है। हम परंपराओं को या हमारी असुरक्षा की भावनाओं को परमेश्वर के उद्‌देश्यों और इस पृथ्वी पर उसके वर्तमान कार्य की ओर आगे बढ़ने के मार्ग में बाधा नहीं बनने दे सकते। पांच प्रकार के सेवाधिकारी जो आगे नहीं बढ़ना चाहेंगे, वे पीछे रह जाएंगे, जबकि परमेश्वर की उपस्थिति का 'बादल और आग' का खम्भा आगे बढ़ जाएगा।

निर्बल कर देने वाली परंपराओं को त्याग दें

यीशु ने फरीसियों और शास्त्रियों के साथ जिन्होंने अपनी परंपराओं को पकड़ कर रखा था और परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करते थे, प्रेम से बात नहीं की (मत्ती 15:1–9)। वस्तुतः, वे मनुष्यों द्वारा बनाई गई परपंराओं में इस तरह दृढ़ हो चुके थे कि वे प्रभु के वचन के बजाए इन परंपराओं को सिखाते थे।

हम उन परंपराओं को त्याग दें जिन्होंने हमें निर्बल बनाया है।

➢ हम में से कुछ लोगों के लिए हमारी धार्मिक परंपराओं में वर्तमान समय के प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं का स्थान नहीं है (हम केवल सुसमाचार प्रचारकों, पासबानों और शिक्षकों को स्वीकार करते हैं)। इस बात को समझें कि परमेश्वर ने प्रेरित और भविष्यद्वक्ता की सेवाओं को फिर स्थापित किया है। पवित्र लोगों को सिद्ध बनाने हेतु इनकी आवश्यकता है।

- हम में से कुछ लोग पुराने पादरी और सामान्य विश्वासी – लेमैन की मानसिकता रखते हैं। हमें समझना है कि हर एक विश्वासी सेवक है।
- हम में से कुछ आज भी 'आत्मिक' और 'संसारिक' में फर्क देखते हैं। परमेश्वर द्वारा नियुक्त हर गतिविधि सेवकाई है, चाहे वह गिरजाघर की इमारत में हो या संसार में (निगम कार्यालय, शिक्षा संस्थान, खेल कूद का मैदान, इत्यादी)।
- हम में से कुछ लोग अपनी मशकों को –हमारी कलीसिया या सेवकाई की रचना और क्रम– बदलने के लिए तैयार नहीं हैं। नया दाखरस नई मशकों में ही रखा जाएगा (मत्ती 9:17)।
- वर्तमान समय में पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने (नया दाखरस) के लिए नई कलीसियाई संरचना और प्रशासन (नई मशकों) की आवश्यकता है। हमारी कलीसिया या सेवकाई की रचना में पांच प्रकार के सेवा कार्यों के लिए – प्रेरित, भविष्यद्वक्ता, पासबान, शिक्षक, सुसमाचार प्रचारक – स्थान नहीं है। हमारी कलीसियाई संरचना के द्वारा, हमने उन सेवा कार्यों को मिटा दिया है जिन्हें मसीह ने कलीसिया में आरंभ किया – और इस कारण निश्चित रूप से सेवा के कार्य के लिए पवित्र लोगों को तैयार करने का कोई मार्ग हमारे पास नहीं है। हम अपनी कलीसियाई संरचना और क्रम को बदल दें, अन्यथा हम ऐसी मशकें बन जाएंगे जिनमें पवित्र आत्मा का दाखरस नहीं होगा।
- हम में से कुछ निश्चित विधियों और प्रणालियों से लिपटे हुए हैं। हम ऐसी प्रणालियों और योजनाओं का उपयोग करते हैं जो वास्तविक थीं, परमेश्वर द्वारा दी गई थीं, परंतु कुछ निश्चित समय के लिए थीं। परमेश्वर जो कुछ कर रहा है उसके साथ हम आगे नहीं बढ़े हैं। जो कल के लिए उपयोगी था, ज़रूरी नहीं है कि उस तरह परमेश्वर आज भी कार्य करना चाहे। परमेश्वर के साथ कदम बढ़ाएं।

उदाहरण :

- पीतल का सांप (गिनती 21:8,9; 2 राजा 18:4)।
- मूसा और चट्टान में से पानी (निर्गमन 17:6; गिनती 20:8)।
- यूहन्ना बपतिस्मा करने वाला (यूहन्ना 1:35–37)।
- अपुल्लोस (प्रे.काम 18:24–26)।
- इफिसुस में यूहन्ना बपतिस्मा करने वाले के अनुयायी (प्रे.काम 19:1–6)।

असुरक्षा की भावनाओं से मुक्त हों

हम असुरक्षा की भावनाओं का सामना करें और उनसे छुटकारा पाएं।

परमेश्वर के लोगों के 'पिता' और 'माता' बनने हेतु हमें खड़े होने की आवश्यकता है।

पौलुस के समान हमें 'तीमुथियुस' का परिपोषण करने के योग्य बनने और उन्हें ऐसे स्थान में लाने की ज़रूरत है जहां पर वे हमारे सहकर्मी बनेंगे (रोमियों 16:21) और सेवा के कार्य को करने योग्य बनेंगे, जैसे हम करते हैं (1 कुरि. 16:10)।

प्रेरित और भविष्यद्वक्ता की सेवकाई के लिए अपने हृदय को खोल दे

हमें सच्ची प्रेरित और भविष्यद्वक्ता की सेवकाइयों के प्रति अपने रवैये को बदलना है। व्यक्तिगत स्तर पर और हमारी कलीसिया के सेवकाई के स्तर पर हमें पांच प्रकार की सेवकाइयों के लिए अपने हृदयों को खोल देना है जिन्हें परमेश्वर ने कलीसिया में रखा है।

परमेश्वर ने प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं को कलीसिया में रखा है (1 कुरि. 12:28)। परमेश्वर ने कलीसिया में जो रखा है उसे हटाना हमारा काम नहीं है।

जो लोग हमारे पहले होकर गए और जिन्होंने पवित्र आत्मा के प्रकाशन और अन्य बातों के नए क्षेत्रों में प्रवेश किया, उनसे हमें सीखना है। ये शिक्षाएं और अनुभव लिखित वचनों के विरोध में नहीं हैं। बल्कि वे उन बातों को पुनर्स्थापित करते हैं और दृढ़ करते हैं जिनकी योजना परमेश्वर ने पहले ही अपने लोगों के लिए तैयार की है।

हमें प्रेरित और भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा प्रकाशन एवं वरदानों को प्राप्त करना है।

यह सच है कि जब हम अपने जीवनों को प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं के लिए खोल देंगे, तब हम में से कुछ लोगों के लिए यह बड़ा कार्य होगा। परमेश्वर में और उसके आत्मा में जहां हम पहले कभी नहीं गए हैं उससे आगे जाने हेतु हमें चुनौती प्राप्त होगी। जो गूढ़ बातें अब तक परमेश्वर के वचन में छिपी हुई थीं, जिन्हें हमारी आत्मिक आंखों ने नहीं देखा है, हमारे लिए अचानक सजीव हो उठेंगी (इफिसियों 3:5)। आत्मिक रहस्यों के लिए अपनी आंखों को खोल देना प्रेरित और भविष्यद्वक्ताओं की सेवकाई का विशेष गुण है।

एक और क्षेत्र में हमें तब चुनौती प्राप्त होगी जब हम प्रेरित और भविष्यद्वक्ता की सेवकाई के लिए अपने हृदय को खोल देंगे, वह है हम में से कई लोगों के लिए, हमारी नींवें फिर डाली जाएंगी। हमने सोचा होगा कि हमारे पास सेवकाई के लिए ईश्वर विज्ञान की सही बुनियाद है, स्थानीय कलीसिया के विषय में सही ज्ञान है, आदि। परंतु हम जानेंगे कि इसमें से बहुत कुछ मनुष्य द्वारा बनाया हुआ था – मात्र काठ या घास या फूस। प्रेरित और भविष्यद्वक्ता कुछ क्षेत्रों में हमारे लिए फिर नींव को डालेंगे जो सचमुच प्रभु की ओर से हैं और उसके वचन के अनुसार है (1 कुरि. 3:10; इफि. 2:20,21), ताकि हम उस पर

निर्माण कर सके। परिणाम स्वरूप, हमारे जीवन और सेवकाइयों को नया रूप – ताज़गीभरा रूप प्रदान होगा – जो सचमुच हमारे प्रभु और राजा को चित्रित करता और दर्शाता है, बजाए इसके कि मनुष्य को।

पवित्र लोगों को सिद्ध बनाने की व्यवहारिक कुंजियां

विश्वासियों को ठोस आहार दें

यदि हम अपने पुलपिट से पवित्र लोगों को केवल दूध पिलाते हैं या अन्य कोई तरल या निर्बल सन्देश सुनाते हैं, तो हम यह अपेक्षा नहीं कर सकते कि पवित्र लोग सेवा के कार्य के लिए सिद्ध बनें। परमेश्वर की पूर्व मनसा ही विश्वासियों को हर भले कार्य के लिए पूर्ण रूप से सिद्ध बनाएगी (2 तीमु 3:16)।

मैं इस बात को समझता हूं कि शिशुओं को वचन के दूध की आवश्यकता है (1 पतरस 2:2)। परंतु हमें शिशुओं को जल्दी बड़ा होने के लिए उत्साहित करना है, ताकि वे वचन का ठोस भोजन ग्रहण कर पाएं (इब्रानियों 5:12–14)।

हमें परमेश्वर की पूर्ण मनसा को घोषित करना है, विश्वासियों को आत्मा की बातों में प्रशिक्षित करना है, उस विषय में उन्हें सिखाना है, पवित्र आत्मा के वरदानों को, चिन्ह, चमत्कारों और सामर्थ के कामों को सक्रिय बनाना है। हमें मसीह–सदृश चरित्र और परिपक्वता के विकास को महत्व देना है।

विश्वासियों को उनकी बुलाहट पहचानने में सहायता करें

हमें विश्वासियों को उनकी बुलाहट को पहचानने, मसीह की देह में उनके स्थान और कर्तव्य को पहचानने में उनकी सहायता करना है। हमें उन्हें यह भी दिखाना है कि स्थानीय कलीसिया में और संसार के संदर्भ में अपनी बुलाहट को कैसे जिएं।

हमारी कलीसियाओं में कई विश्वासी निकम्मे पड़े हैं जिनकी क्षमता केवल इसलिए बर्बाद हो रही है क्योंकि उन्हें उनका स्थान और कर्तव्य जानने और खोजने में – उनकी बुलाहट पहचानने में सहायता नहीं की गई।

पांच प्रकार के सेवाधिकारियों को इस दृष्टि से कार्य करना है कि हर विश्वासी सेवक है। स्थानीय कलीसिया के हर व्यक्ति को अपनी बुलाहट पहचानना है, उसे पूरा करने के लिए तैयार होना है, और अपनी बुलाहट में कार्य करने लगना है!

आत्मा में कार्यरत होने के लिए विश्वासियों को समर्थ बनाना

विश्वासियों को सिखाया जाना चाहिए कि किस प्रकार अपने जीवनों को जीने के लिए और पृथ्वी पर अपनी सेवकाइयों को पूरा करने के लिए वे पवित्र आत्मा में कार्य करें।

सेवकाई और पेशे को एक साथ जोड़ने हेतु विश्वासियों को प्रोत्साहित करना

स्थानीय कलीसिया को उन लोगों को तैयार करना आरंभ करना है जिन्हें बाज़ांरों में सुसमाचार सुनाने हेतु बुलाया गया है।

बाज़ारों में पांच प्रकार के सेवकों की सेवा के उदय को प्रोत्साहन दें।

पवित्र लोगों को बाज़ारों में सेवा करने के लिए बाज़ारों में सेवारत पांच प्रकार के सेवाधिकारी ही उत्तम रीति से तैयार कर सकते हैं।

बाज़ारों में सेवारत विश्वासियों को निर्णय लेने हेतु, सेवा करने और गवाही देने हेतु परमेश्वर की आवाज़ सुनने के लिए तैयार करने की ज़रूरत है। बाज़ारों में सेवारत विश्वासियों को जहां वे हैं, वहां

पवित्र आत्मा के वरदानों में कार्य करने और अलौकिक बातों को प्रगट करने हेतु सिखाने की आवश्यकता है।

बाज़ारों में सेवारत विश्वासियों को यह सिखाने की आवश्यकता है कि वे अपने कामों में बाइबल के सिद्धान्तों को कैसे लागू करें और इस परमेश्वर के प्रकार राज्य के प्रभाव को कैसे स्थापित करें।

बाज़ारों में सेवारत विश्वासियों को यह सिखाने की आवश्यकता है कि बाज़ारों में परमेश्वर के राज्य के नाकों को (चौकी, संगति, गिरजाघर) स्थापित कर कैसे परमेश्वर के राज्य की बढ़ौतरी का कारण बनें। कैसे उन नीतियों को प्रभावित करनें जिससे राज्य आगे बढ़ सके और कैसे धन को परमेश्वर के राज्य के कामों के लिए स्थानांतरित किया जाए।

मार्गदर्शक (मेन्टर) बनें और मार्गदर्शक संस्कृति का निर्माण करें

पांच प्रकार की सेवा में कार्यरत सेवाधिकारियों के नाते, हमें पवित्र लोगों के मार्गदर्शक (माता या पिता) बनने की आवश्यकता है।

यह सच है कि एक व्यक्ति बहुसंख्य लोगों का मार्गदर्शन, उनकी देखभाल नहीं कर सकता। परंतु हम कुछ लोगों को मार्गदर्शन कर सकते हैं और हमारी कलीसियाओं में और सेवा संस्थाओं में मार्गदर्शक (मेन्टर) संस्कृति का निर्माण कर सकते हैं, जहां पर परिपक्व पवित्र जनों को विश्वास में अन्य लोगों के पिता और माता बनने हेतु प्रोत्साहित किया जा सके।

सेवकाई की ज़िम्मेदारी दूसरों को सौंपें

विश्वासयोग्य एवं सुयोग्य विश्वासियों के लिए सेवा के अवसर तैयार करें और उन्हें सेवकाई की ज़िम्मेदारियां सौंपें। सेवकाई की ज़िम्मेदारियों को दूसरों को सौंपने का उदाहरण हम मूसा के समय में देखते हैं, जहां

पर उसके ससूर इथ्रो ने उसे ऐसा करने के निर्देश दिए थे (निर्गमन 18)।

सेवकाई की टीम तैयार करें और टीम संस्कृति का निर्माण करें

जैसा कि पहले बताया गया है, हमें दूसरों को सेवकाई टीम के रूप में हमारे साथ होकर कार्य करने की अनुमति देना चाहिए। ऐसी टीम संस्कृति तैयार करें जहां पर होड़ न हो, परंतु गहरे सहयोग की भावना हो, जहां पर टीम के सभी पवित्र लोगों को तैयार करने और प्रभु यीशु मसीह को महिमा प्रदान करने के समान लक्ष्य पर कार्य किया जाता हो।

युद्ध नीतिक बनें

हमें रणनीति की दृष्टि से सोचना और कार्य करना है और जब परमेश्वर संसार में अपने लोगों को नमक और ज्योति के रूप में खड़ा करता है, तब हमें परमेश्वर के साथ साथ चलने की आवश्यकता है। उदाहरण के लिए, जब विश्वासी को अपने पेशे की वजह से एक स्थान से दूसरे स्थान में जाना पड़ता है, तब यह नई कलीसिया स्थापित करने का, या होम ग्रुप आरंभ करने का अवसर हो सकता है। यदि विश्वासियों को तैयार किया जाए, तो निश्चित रूप से यह एक दृढ़ संभावना होगी।

परमेश्वर के राज्य की मानसिकता रखने वाले बनें

पांच प्रकार की सेवा करने वाले हम लोगों के लिए यह अत्यंत महत्वपूर्ण है कि हम परमेश्वर के राज्य की मानसिकता रखने वाले बनें और पवित्र लोगों को भी राज्य की मानसिकता रखने वाले बनना सिखाएं। राज्य की मानसिकता रखने वाले बनने का मतलब है परमेश्वर के राज्य के उद्देश्य को और राजा की महिमा को अपनी व्यक्तिगत कार्य सूचि से, फिरकों और सेवकाइयों से अधिक महत्व देना।

निम्नलिखित पुस्तकों को पढ़ने की सिफारिश की जाती है

"किंगडम बिल्डर्स" – ऑल पीपल्स चर्च ॲण्ड आऊटरीज़, बैंगलोर का मुफ्त प्रकाशन है। इस पुस्तक में इन व्यवहारिक कुंजियों में से कइयों का विवरण दिया गया है। इस पुस्तक का चौथा अध्याय यह बताता है कि आत्मा में लोगों की कैसे उन्नति करें। सातवां अध्याय अगली पीढ़ी को बढ़ावा देने के विषय में बताता है, इस अध्याय में मेन्टरींग या मार्गदर्शन पर विशेष ज़ोर दिया गया है।

यदि हम आगे न बढ़े तो क्या होगा

पांच प्रकार के सेवा करने वाले सेवाधिकारियों के नाते, परमेश्वर की वर्तमान बेदारी में, पवित्र लोगों के बेदारी में यदि हम आगे न बढ़ पाए, तो उसके गंभीर परिणाम होंगे।

प्रभाव खो बैंठेगे

यदि हम परमेश्वर की वर्तमान बेदारी में आगे न बढ़ पाए, तो विश्वासियों के जीवनों पर हमारा प्रभाव कम हो जाएगा। जो विश्वासी आत्मिक उन्नति, परिपक्वता और परमेश्वर के राज्य के लिए उपयोगिता की वास्तविक इच्छा रखते हैं, वे आगे बढ़कर ऐसी कलीसिया और सेवकाइयों से जुड़ जाएंगे जो पवित्र लोगों को सिद्ध बनाने के कार्य में लगे हुए हैं।

परमेश्वर के कार्य में असफल होने का दण्ड

पांच प्रकार के सेवाधिकारियों के लिए परमेश्वर का कार्य यह है कि हम सेवा के कार्य के लिए पवित्र लोगों को सिद्ध बनाएं। पांच प्रकार के सेवाधिकारियों के नाते, यदि हम ऐसा करने से चुक गए, तो परमेश्वर द्वारा दिए गए कार्य में हम असफल रह जाएंगे। जब हम प्रभु के सम्मुख खड़े होकर यहां पृथ्वी हमारे जीवनों का हिसाब देंगे, तो हम कम पाएं जाएंगे (2 कुरि. 5:9,10)।

5
शहर व्यापी कलीसिया

शहर व्यापी कलीसिया में नए परिवर्तन

जब शहर व्यापी कलीसिया तैयार हो जाएगी और सेवा के लिए मुक्त की जाएगी, तब शहर का क्या होगा (या किसी भी भौगोलिक क्षेत्र का – नगर, गांव)?

कलीसिया नियमित रूप से अपनी रविवार की स्थानीय सभाओं में इकट्ठा होने के बजाय, प्रायः बाज़ारों में इकट्ठा हुआ करेगी। विभिन्न स्थानीय कलीसियाओं के पवित्र लोग सप्ताह के पांच या छः दिन बाज़ारों में मिलेंगे, और स्थानीय कलीसियाओं में सप्ताह में एक या दो बार इकट्ठा होंगे। ये सभी पवित्र लोग बाज़ारों में परमेश्वर को प्रगट करने हेतु तैयार किए जाएंगे। उनकी आम पहचान होगी मसीह की प्रभुता। स्थानीय कलीसियाओं के नाम, फिरके या सेवकाई की संलग्नताएं सभी मिट जाएंगी और उनका महत्व न होगा। परमेश्वर द्वारा नियुक्त अगुवों का कलीसिया में और बाज़ारों में उदय होगा और वे एक साथ मिलकर संपूर्ण संसार में परमेश्वर की महिमा का कारण बनेंगे।

परिणाम स्वरूप, शहर पर प्रभाव डालने हेतु स्थानीय कलीसियाओं में उपयुक्त संसाधनों के साथ हम संयुक्त कार्यवाही देखेंगे। शहर में सेवकाई करने वाली मात्र एक ही स्थानीय कलीसिया नहीं होगी।

क्या आप देख सकते हैं कि जब उपयुक्त संसाधनों के साथ शहर व्यापी कार्यवाही होगी, और परमेश्वर द्वारा नियुक्त प्रेरित अगुवे हर कार्यवाही में मार्गदर्शन करेंगे, तब हम शहर पर कैसा प्रभाव डालेंगे? उन आराधना टीमों, जवानों की सुसमाचार सेवाओं, सड़कों पर सुसमाचार सुनाने वाले सुसमाचार प्रचारकों, मध्यस्थता करने वाले प्रार्थना समूहों, बाज़ारों में अन्य महत्वपूर्ण सुसमाचार सेवाएं, सामाजिक कार्य – सड़कों

पर जीवन बिताने वाले, गरीब, बेघर आदि लोगों की मदद करना – आदि बातों की कल्पना करें जिनका संचालन वे पवित्र लोग करेंगे जिन्हें इन विशिष्ट सेवकाइयों के लिए बोझ है। तब शहर व्यापी कलीसिया समाज में ऊंची आवाज़ बनेगी और शहर के बदलाव का कारण बनेगी। **जब शहर व्यापी कलीसिया बदल जाएगी, तब शहर बदल जाएगा!**

परमेश्वर के राज्य की मानसिकता का विकास करना

उन विश्वासियों से, जो कलीसिया में सेवा के कार्य के लिए तैयार किए गए हैं और मुक्त किए गए हैं, परिपूर्ण शहर व्यापी कलीसिया का निर्माण करने हेतु हम कैसे एक साथ परिश्रम करते हैं?

जैसा कि पहले कहा गया है, विभिन्न कलीसियाओं से आने वाले विश्वासी एक स्थान में – काम के स्थान में इकट्ठा होते हैं। "मेरी ही कलीसिया सबसे अच्छी है" यह साम्प्रदायिकतावादी रवैया रखने के बजाए, अपने काम के स्थानों पर प्रभाव डालने के उद्देश्य से टीम के रूप में कार्य करने हेतु उन्हें प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। शहर व्यापी कलीसिया में ईश्वरीय व्यवस्था का उल्लंघन किए बगैर, यदि विश्वासियों को अन्य स्थानीय कलीसियाओं के विश्वासियों के साथ **काम के स्थान पर सेवा में एक साथ परिश्रम करने हेतु सिखाया और प्रशिक्षित किया नहीं जाता, तो परमेश्वर के राज्य का उद्देश्य पूरा नहीं होगा।**

प्रेरित की बुलाहट रखने वाले अगुवों को संसाधनों को (लोग, समय और धन) इकट्ठा करने वाले शहर व्यापी कार्यवाही का नेतृत्व करने हेतु तैयार रहना होगा, शहर में परमेश्वर के राज्य की स्थापना होते हुए देखने के लिए उन्हें स्थानीय कलीसिया की रूकावटों को लांघना होगा। **किसी एक व्यक्ति को, सेवकाई को या स्थानीय कलीसिया को बढ़ावा न देते हुए उन्हें ऐसा करना होगा।**

जब इन सहयोगी प्रयासों के माध्यम से आत्माएं बचाई जाएंगी

और जीवन परिवर्तन होंगे, तब इन नए विश्वासियों को प्रोत्साहन दिया जाए कि वे बाइबल पर विश्वास करने वाली अच्छी स्थानीय कलीसिया का हिस्सा बनें जो उनके लिए अत्यंत उचित है, जहां पर उन्हें शिष्य बनाया जाएगा और सेवा के लिए तैयार किया जाएगा। यह स्थानीय कलीसिया जिसके साथ वे जुड़ जाते हैं, उनके लिए अधिक महत्वपूर्ण न हो क्योंकि हम लोगों के दिलों और जीवनों में उसके राज्य को बढ़ाने का प्रयास कर रहे हैं। सभी स्थानीय कलीसियाओं की उन्नति और विस्तार एक स्वाभाविक परिणाम होगा।

पवित्र लोगों की बेदारी और शहर में बदलाव

स्तेफनुस और फिलिप्पुस जैसे सामान्य विश्वासियों द्वारा यरूशलेम और सामरिया प्रभावित हुआ। ये लोग पवित्र आत्मा, विश्वास, सामर्थ से और चिन्ह और चमत्कार करने की सामर्थ से परिपूर्ण थे (प्रे.काम 6:8; 8:5–8)।

उसी तरह, फिनिशिया, कुप्रस और अन्ताकिया आदि नगरों में भी उन विश्वासियों द्वारा सुसमाचार प्रचार किया गया जो यरूशलेम से बाहर चले गए थे (प्रे.काम 11:19–21)। वे मात्र सामान्य विश्वासी थे जो चिन्ह और चमत्कारों के साथ सुसमाचार का प्रचार करने के द्वारा कलीसियाओं की और परमेश्वर के राज्य की मण्डलियों की स्थापना कर रहे थे।

उसी तरह जब हम विश्वासियों को चिन्ह, चमत्कार और आश्चर्यकर्मों को प्रगट करने हेतु तैयार किया जाएगा, तब हम शहर में आमूल परिवर्तन देखेंगे।

शहर परिवर्तन के हमारे अधिकतर प्रयास अगुवों और सेवकों को इकट्ठा करने पर केन्द्रित होते हैं। यह महत्वपूर्ण और आवश्यक है। परंतु पवित्र लोगों की बेदारी का परिणाम मूल स्तर से शहर परिवर्तन में होगा।

हम पवित्र लोगों की एक ऐसी गुमनाम और अज्ञात पीढ़ी को देखेंगे जो शहर पर प्रभाव डालेगी।

शहर के प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं को पहचानना

शहर में रहने वाले प्रेरित शहर परिवर्तन की महत्वपूर्ण कुंजी हैं। प्रेरितों या प्रेरिताई की सेवकाइयों का आना जाना काफी नहीं है। हमें शहर में रहने वाले और शहर के प्रति समर्पित प्रेरितों की ज़रूरत है जो शहर परिवर्तन के लिए प्रेरिताई का दर्शन, योजना और अगुवाई प्रदान करेंगे।

शहर में प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं का उदय शहर व्यापी कलीसिया को उभरते हुए और शहर में एक बल बनते हुए देखने के लिए आवश्यक है।

मसीह की मण्डली को शहर में रहने वाले सच्चे प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं को पहचानना आरम्भ करना है – ये चाहे सेवा संस्थाओं में कार्यरत हों या बाज़ारों में। हमें कलीसिया में सेवारत और बाज़ारों में कार्यरत प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं को पहचानना है।

बैंगलोर जैसे बड़े शहर में कई सच्चे प्रेरित और भविष्यद्वक्ता होंगे। ये अगुवे जिन्हें परमेश्वर खड़ा करेगा, शहर के विशिष्ट हिस्से में परमेश्वर के राज्य की स्थापना करने हेतु शहर व्यापी दर्शन और नक्शा प्रदान करेंगे। इन क्षेत्रों में विभिन्न कलीसियाओं के विश्वासी शामिल होंगे। नगर के उस क्षेत्र/विभाग/हिस्से या समाज में सुसमाचार द्वारा आक्रमण करने हेतु ये प्रेरित अगुवाई प्रदान करेंगे। हम ऐसे कई प्रेरित अगुवों को उभरते हुए देखेंगे जिनके संयुक्त प्रयासों से शहर में बदलाव आएगा।

आम समस्या यह है कि शहर के प्रेरित अगुवे अनवरत शहर व्यापी सुसमाचारीय कार्यवाही की ज़िम्मेदारी उठाने के लिए तैयार नहीं हैं, जो समाज के विशिष्ट क्षेत्र में व्याप्त हो जाएगी। इसके बजाए हमें गिरजाघरों में और अपनी संस्थाओं में काम करना ज़्यादा आरामदायक

लगता है। या तो हम अपने विचारों में संकीर्णता रखते हैं और हमें परमेश्वर के राज्य की मानसिकता रखने की ज़रूरत है, या हमें डर है कि हमारे साथी सेवक गलत समझेंगे और इसलिए हम अगुवाई करने हेतु कदम बढ़ाने के लिए अनिच्छुक हैं। यह सच है कि एक सहयोगी शहर व्यापी प्रयास में अगुवाई करना आसान नहीं होगा। चुनौतियां अधि ाक हैं। इसके लिए हमारी स्थानीय कलीसियाओं और सेवकाइयों के अलावा हमें अधिक समय और प्रयास की आवश्यकता पड़ेगी। परंतु हमें फैसला करने की ज़रूरत है कि कौन सी बात अधिक महत्वपूर्ण है – अपनी स्थानीय कलीसियाओं और सेवकाइयों का निर्माण करना या हमारे संपूर्ण शहर में परमेश्वर के राज्य को आते हुए देखना, ताकि लाखों लोग उद्धार पा सकें!

शहर व्यापी कलीसिया को परमेश्वर के राज्य की मानसिकता का विकास करना चाहिए और सच्चे प्रेरित और भविष्यद्वक्ताओं को पहचानना, उन्हें स्वीकार करना और उन्हें इकट्ठा करना आरंभ करें जिन्हें परमेश्वर शहर में अपने कार्य के लिए खड़ा करता है। प्रेरित और भविष्यद्वक्ता की सेवकाई करने वाले अगुवों को शहर व्यापी कलीसिया को तैयार करने हेतु और शहर परिवर्तन की विभिन्न सामुहिक कार्यवाहियों का मार्ग तैयार करने हेतु एक साथ मिलकर एक सामुहिक रणनीति तैयार करना है। शहर की कलीसिया को आगे आत्मा की एकता में बढ़कर कार्यक्रम/कान्फ्रेन्सेस/सभाएं लेना होगा। आत्मा की एकता कार्यक्रम/कान्फ्रेन्सेस/सभाओं का आयोजन करने पर निर्भर नहीं है। यह हृदय और मन का परिवर्तन है। यह उस एकता के स्थान में रहना है जो शहर परिवर्तन की ओर आवश्यक कदम बढ़ाने के लिए हमें तैयार करेगा।

यदि शहर व्यापी कलीसिया आत्मा की एकता में जीवन व्यतीत करेगी और कार्य करेगी, और पवित्र लोगों की बेदारी द्वारा उत्पन्न विश्वासियों की सेना के साथ जुड़ जाएगी, जो सेवा का कार्य करने के लिए तैयार की गई है, तो हम अपने शहर को प्रभु यीशु मसीह के द्वारा सामर्थी रूप से प्रभावित देखेंगे।

सम्भवनीय कठिनाइयों को देखना

हम कौन से सम्भवनीय खतरों और रुकावटों को देख सकते हैं और उनमें से कैसे बच निकलते हैं?

अपरिपक्व विश्वासी

- राज्य की मानसिकता रखने के बजाए, "मेरी सेवकाई" वाली मानसिकता रखने वाले अगुवे।
- धार्मिक परंपराओं के साथ चलने वाले और इन परंपराओं के साथ लोगों पर धौंस जमाने की कोशिश करने वाले अगुवे।
- मान्यता, महिमा और खुद की उन्नति की चाह रखने वाले अगुवे।
- हमारे प्रभु मसीह यीशु पर ध्यान लगाने के बजाए प्रेरित अगुवों पर ध्यान लगाने और उन्हें बढ़ावा देने हेतु लोगों को उत्साहित करने वाले। यह दावा करने वाले कि लोग केवल एक मात्र प्रेरित अगुवे पर अपना ध्यान केन्द्रित करें, इस प्रकार अन्य सेवकों से आशीष पाने के मार्ग में रुकावट बनना।
- शहर व्यापी परिवर्तन की ज़िम्मेदारी और अगुवेपन का खतरा मोल लेने के लिए अनिच्छुक अगुवे।
- "परमेश्वर के राज्य की मानसिकता" के होने के नाम पर अन्य अगुवों के साथ रिश्ता न रखने वाले, परंतु वास्तव में अपने स्वार्थपूर्ण कार्यक्रमों को बढ़ावा देते हैं। यह प्रायः निश्चित है कि कुछ लोग अन्य अगुवों की सादगी का गलत लाभ उठाते हैं और अपने ही हित को बढ़ावा देते हैं। परंतु, परिपक्व अगुवे इस बात को पहचान लेंगे और बुद्धिमानी और विवेक के साथ इन प्रयासों को दूर करेंगे,

और अपने हृदयों को इस प्रकार के अपराधों से बचाएं रखेंगे।

अगुवे होने के नाते खुद के लिए मरने की तैयारी, और बहुत समझ और परमेश्वर के राज्य की बढ़ोतरी की इच्छा की हमें आवश्यकता होगी, बजाए इसके कि हम अपनी कलीसिया और सेवकाई को बढ़ावा दें।

अपरिपक्व विश्वासी

- जो विश्वासी अपने आप में नियम बना लेते हैं और शहर व्यापी कलीसिया में ईश्वरीय व्यवस्था का उल्लंघन करते हैं। हमें सहयोग की भावना और राज्य की मानसिकता को प्रोत्साहन देना है, परंतु इसका मतलब यह नहीं कि हम विश्वासियों को आत्मिक अगुवों और कलीसियाई प्रशासन के प्रति बाइबल आधारित ज़िम्मेदारी का उल्लंघन करने की अनुमति दें।
- परमेश्वर द्वारा नियुक्त अगुवों के प्रति विद्रोही बनने वाले विश्वासी, जैसे कि हारून ने मूसा के विरोध में विद्रोह किया या अबशालोम ने दाऊद के विरोध में विद्रोह किया। हमें ऐसे विश्वासी चाहिए जो यहोशू के समान मूसा के प्रति या दाऊद के समान शाऊल के प्रति वफादारी रखते हैं।
- अपने उत्साह की वजह से बिना बुद्धिमानी और परिपक्वता से काम करने वाले विश्वासी की अनुचित तरीकों से अन्य लोग सत्य का इन्कार कर देते हैं।

विश्वासियों को परमेश्वर के वचन में और आत्मा के कार्य के प्रकाशन में दृढ़ बुनियाद की आवश्यकता होगी।

निम्नलिखित पुस्तक के वाचन की सिफारिश की जाती है :

“किंगडम बिल्डर्स” – ऑल पीपल्स चर्च ॲण्ड आऊटरीज़, बैंगलोर का मुफ्त प्रकाशन है।

प्रार्थना

पवित्र लोगों के उदय के लिए प्रार्थना

प्रिय पिता, हम यीशु के नाम से हमारे शहर की मसीही मण्डली के लिए प्रार्थना करते हैं। हम प्रार्थना करते हैं कि विश्वासी उठ खड़े हों जो हर भले कार्य के लिए पूर्ण रूप से तैयार किए गए हैं। हम हमारे शहर के विश्वासियों के लिए प्रार्थना करते हैं कि वे सब बातों में यीशु के समान बनने हेतु खड़े हों। हम प्रार्थना करते हैं कि विश्वासी हर स्थानों में – पाठशालाओं, कॉलेजों, सरकारी दफ्तरों, सड़कों पर, निगम कार्यालयों और खेलकूद के मैदानों में चिन्ह, चमत्कारों और आश्चर्यकर्मों को प्रगट करें – ताकि लोग जान लें कि यीशु सच्चा है और वे उस पर विश्वास करने लगेंगे।

शहर व्यापी कलीसिया की एकता और उदय के लिए प्रार्थना

पिता, हम हमारे शहर में, शहर व्यापी कलीसिया में आत्मा की एकता के लिए प्रार्थना करते हैं। हम प्रार्थना करते हैं कि हमारे शहर के मसीही अगुवे आत्मा में मज़बूत एकता के स्थान पर आएं। हम प्रार्थना करते हैं कि यह एकता हमारे शहर के सभी विश्वासियों में पहुंचने पाए। हम प्रार्थना करते हैं कि हमारे शहर की मसीही मण्डली मज़बूत हो, पवित्र आत्मा की सामर्थ में खड़ी हो और हमारे शहर में यीशु मसीह के सुसमाचार के साथ प्रवेश करे।

शहर में प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं के उदय के लिए प्रार्थना

प्रभु, हम प्रार्थना करते हैं कि हमारे शहर में सच्चे प्रेरित और भविष्यद्वक्ता उदय हों। हम प्रार्थना करते हैं कि आप ऐसे प्रेरित और भविष्यद्वक्ताओं को खड़ा करें जिनके पास इस शहर में आपकी कलीसिया के लिए

हृदय और शहर के बदलाव की इच्छा हो। हम प्रार्थना करते हैं कि वे नम्रता और सौम्यता की सच्ची आत्मा के साथ चलें। हम प्रार्थना करते हैं कि वे कलीसिया और डिनॉमिनेशन्स की सीमाओं से परे एक उद्‌देश्य के साथ विश्वासियों के सामुहिक प्रयासों को नेतृत्व प्रदान करने की जिम्मेदारी स्वीकार करें – इसका उद्‌देश्य यह है कि आपका राज्य शहर में आए और आपकी इच्छा पूरी हो।

हम ऐसे कई प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं के लिए प्रार्थना करते हैं जो हमारे शहर की विभिन्न गतिविधियों में सहभागी हों ताकि संपूर्ण कलीसिया में परिवर्तन आए। हम प्रार्थना करते हैं कि आप उन्हें आपके लोगों के लिए पिता का सच्चा हृदय प्रदान करेंगे।

शहर के परिवर्तन के लिए प्रार्थना

प्रभु, हम प्रार्थना करते हैं कि हमारे शहर का उद्धार हो। हमारी इच्छा है कि हमारे शहर के लाखों लोग प्रभु यीशु मसीह में उद्धार दायक विश्वास लाएं। हमारा शहर हर रीति से बदल जाए – आत्मिक, नैतिक, और जीवन के हर पहलु में।

हम यीशु के नाम से यह प्रार्थना करते हैं।

आमीन!

ऑल पीपल्स चर्च के प्रतिभागी

स्थानीय कलीसिया के रूप में संपूर्ण भारत देश में, विशेषकर उत्तर भारत में सुसमाचार प्रचार करने के द्वारा ऑल पीपल्स चर्च अपनी सीमाओं के पार सेवा करता है; उसका मुख्य लक्ष्य (अ) अगुवों को दृढ़ करना, (ब) जवानों को सेवा के लिए सुसज्जित करना और (क) मसीह की देह की उन्नति करना है। संपूर्ण वर्षभर जवानों, और पासबानों तथा सेवकों के लिए कई प्रशिक्षण कार्यक्रमों और पासबानों की महासभाओं का आयोजन किया जाता है। इसके अलावा, वचन में और आत्मा में विश्वासियों की उन्नति करने के उद्देश्य से अंग्रेजी तथा अन्य कई भारतीय भाषाओं में पुस्तकों की कई हज़ारों प्रतियां विनामूल्य वितरीत की जाती हैं।

जिन बातों की ओर परमेश्वर हमारी अगुवाई कर रहा है उसके लिए काफी पैसों की ज़रूरत होती है। हम आपको निमंत्रित करते हैं कि एक समय की भेंट या मासिक मदद भेजकर आर्थिक रूप से हमारे साथ भागीदार बनें। देश भर में हमारे इस कार्य में हमारी सहायता करने हेतु आपके द्वारा भेजी गई कोई भी रकम सराहनीय होगी।

आप अपनी भेंट "ऑल पीपल्स चर्च, बैंगलोर" के नाम से चेक/बैंक ड्राफ्ट के जरिए हमारे ऑफिस के पते पर भेज सकते हैं। अन्यथा आप अपना योगदान सीधे हमारे बैंक खाते की जानकारी लेकर सीधे बैंक में जमा कर सकते हैं। *(कृपया इस बात को ध्यान में रखें : ऑल पीपल्स चर्च के पास एफ.सी.आर.ए. परमीट नहीं है, अतः हम केवल भारतीय नागरिकों से बैंक योगदान पा सकते हैं। यदि आप चाहते हैं, तो दान भेजते समय, आप स्पष्ट रूप से यह लिख सकते हैं कि ए.पी.सी. की किस सेवकाई के लिए आप अपने दान भेजना चाहते हैं।)*

बैंक खाते का नाम : ऑल पीपल्स चर्च

खाता क्रमांक : 0057213809

आय एफ एस सी क्रमांक : CITI0000004

बैंक : Citibank N.A., 506-507, Level 5, Prestige Meridian 2, # 30, M.G. Road, Bangalore - 560 001

उसी तरह, कृपया जब भी हो सके, हमें और हमारी सेवकाई को प्रार्थना में स्मरण रखें। **धन्यवाद और परमेश्वर आपको आशीष दे।**

ऑल पीपल्स चर्च के प्रकाशन

बदलाव

अपनी बुलाहट से समझौता न करें

आशा न छोड़ें

परमेश्वर के उद्देश्यों को जन्म देना

परमेश्वर एक भला परमेश्वर है

परमेश्वर का वचन

सच्चाई

हमारा छुटकारा

समर्पण की सामर्थ

हम भिन्न हैं

कार्यस्थल पर महिलाएं

जागृति में कलीसिया

प्रत्येक काम का एक समय

आत्मिक मन से परिपूर्ण और पृथ्वी पर बुद्धिमान

पवित्रा लोगों को सिद्ध बनाना

अपने पास्टर की कैसे सहायता करें

कलह रहित जीवन जीना

एक वास्तविक स्थान जो स्वर्ग कहलाता है

परिशद्ध करने वाले की आग

व्यक्तिगत और पीढ़ियों के बन्ध्नों को तोड़ना

आपके जीवन के लिए परमेश्वर के उद्‌देश्य को पहचानना

राज्य का निर्माण करने वाले

खुला हुआ स्वर्ग

हम मसीह में कौन हैं

ईश्वरीय कृपा

परमेश्वर का राज्य

शहरव्यापी कलीसिया में ईश्वरीय व्यवस्था

मन की जीत

जड़ पर कुल्हाडी रखना

परमेश्वर की उपस्थिति

काम के प्रति बाइबल का रवैया

ज्ञान, प्रकाश और सामर्थ का आत्मा

अन्य अन्य भाषाओं में बोलने के अदभुत लाभ

प्राचीन चिन्ह

उपर्युक्त सभी पुस्तकों के पी डी एफ संस्करण निःशुल्क डाऊनलोड के लिए हमारे चर्च वेब साईट पर उपलब्ध हैं। इनमें से कई पुस्तकें अन्य भाषाओं में भी उपलब्ध हैं। इन पुस्तकों की निःशुल्क प्रतियां प्राप्त करने हेतु कृपया हमसे ई–मेल या डाक द्वारा संपर्क करें।

रविवार के संदेश के एम पी 3 ऑडियो रिकार्डिंग, तथा कॉन्फ्रन्स और हमारे गॉड टी. व्ही. कार्यक्रम 'लिविंग स्ट्रांग' के विडियो रिकार्डिंग को सुनने या देखने के लिए हमारे वेब साईट को भेंट दें।

ALL PEOPLES CHURCH
Bible College
& MINISTRY TRAINING CENTRE

बाइबल कॉलेज

विश्वसनीय एवं योग्य स्त्री और पुरुषों को सुसज्जित करने, प्रशिक्षित करने और भारत तथा अन्य देशों में सेवा हेतु भेजने के उद्देश्य से ऑगस्ट 2005 में ऑल पीपल्स चर्च – बाइबल कॉलेज एवं मिनिस्ट्री ट्रेनिंग सेन्टर (APC - BC& MTC) की स्थापना की गई, ताकि गांवों, नगरों और शहरों को यीशु मसीह के लिए प्रभावित किया जा सके।

APC - BC& MTC दो कार्यक्रम प्रदान करता है :

- दो साल का **बाइबल कॉलेज** कार्यक्रम पूर्णकालीन विद्यार्थियों के लिए है और उत्कृष्ट शिक्षा के साथ आत्मिक और व्यवहारिक सेवा प्रशिक्षण प्रदान करता है। दो वर्षीय कार्यक्रम पूरा करने के बाद विद्यार्थियों को **डिप्लोमा इन थियोलॉजी ॲण्ड क्रिश्चियन मिनिस्ट्री** (Dip. Th.& CM) प्रदान की जाएगी।

- प्रेक्टिकल मिनिस्ट्री ट्रेनिंग बाइबल कॉलेज के उन पद्वीधरों के लिए है जो व्यवहारिक प्रशिक्षण पाना चाहते हैं। एक या दो साल पूरा करने वालों को **सर्टिफिकेट इन प्रेक्टिकल मिनिस्ट्री** प्रदान किया जाएगा जो उनके प्रशिक्षण काल को दर्शाता है।

कक्षाएं अंग्रेजी में होती हैं। हमारे पास प्रशिक्षित तथा अभिषक्त शिक्षक हैं।

इसके अतिरिक्त, सन 2012 में, चाम्पा क्रिश्चियन हॉस्पिटल की सहभागिता से हमने चाम्पा, छत्तीसगढ़ में अपने प्रथम अल्पकालीन (2.5 महीने) कार्यक्रम का संचालन किया। हमने इस कॉलेज से 45 विद्यर्थियों को प्रशिक्षित किया।

क्या आप उस परमेश्वर को जानते हैं जो आपको प्यार करता है?

लगभग 2000 वर्ष पहले परमेश्वर इस संसार में एक मनुष्य बनकर आए। उनका नाम यीशु है। उन्होंने पूर्ण पापरहित जीवन जीया। चूँकि यीशु मानव रूप में परमेश्वर थे, उन्होंने जो कुछ कहा और किया उसके द्वारा हमारे समक्ष परमेश्वर को प्रकट किया। उन्होंने जो वचन कहे वे परमेश्वर के ही वचन थे। जो कार्य उन्होंने किये वे परमेश्वर के कार्य थे। यीशु ने बहुत से चमत्कार इस पृथ्वी पर किये। उन्होंने बीमारों और पीड़ितों को चंगा किया। अंधों को आंखें दीं, बहिरों के कान खोले, लंगड़ों को चलाया और हर प्रकार की बीमारी और रोग को चंगा किया। उन्होंने चमत्कार करके कुछ रोटियों से बहुतों को खाना खिलाया था। तूफान को शान्त किया और अन्य बहुत से अद्‌भुत काम किए।

ये सभी कार्य हमारे समक्ष यह प्रकट करते हैं कि परमेश्वर एक भला परमेश्वर है जो यह चाहता कि मनुष्य ठीक, स्वस्थ और प्रसन्न रहें। परमेश्वर मनुष्यों की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करना चाहता है।

परमेश्वर ने मानव बनकर इस पृथ्वी पर आने का निश्चय क्यों किया? यीशु इस संसार में क्यों आए?

हम सबने पाप किया है और ऐसे काम किए हैं जो परमेश्वर के समक्ष ग्रहण योग्य नहीं हैं जिसने हमें बनाया है। पाप के परिणाम होते हैं। पाप एक बड़ी दीवार की तरह परमेश्वर और हमारे बीच में खड़ी है। पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है। वह हमें उसे जानने और उससे अर्थपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करने से रोकता है जिसने हमें बनाया है। अत: हममें से बहुत से लोग इस खालीपन को अन्य वस्तुओं से भरना चाहते हैं।

हमारे पापों का एक और परिणाम यह है कि हम परमेश्वर से सदा के लिए दूर रहते हैं। परमेश्वर के न्यायालय में पाप का दण्ड मृत्यु है। मृत्यु परमेश्वर से सदा के लिए अलगाव है जो हमें नर्क में बिताना पड़ेगा।

परन्तु शुभ समाचार यह है कि हम पाप से मुक्त होकर परमेश्वर से सम्बन्ध रख सकते हैं। बाइबल कहती है, **''पाप की मजदूरी (भुगतान) तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है''** (रोमियों 6:23)। यीशु ने सारे संसार के पापों के लिए मूल्य चुकाया जब उसने क्रूस पर अपने प्राण दिये। तब तीसरे दिन वह जीवित हो गए, बहुतों को उन्होंने अपने आपको जीवित दिखाया और तब वह वापस स्वर्ग चले गए।

परमेश्वर प्रेम और दया का परमेश्वर है। वह नहीं चाहता कि कोई भी नर्क में नाश हो। इसलिए वह आया ताकि सारी मानव जाति को पाप से छुटकारे और उसके अनन्त परिणामों

से बचा सके। वह पापियों को बचाने– आप और मुझ जैसे लोगों को पाप और अनन्त मृत्यु से बचाने आया था।

पाप की निशुल्क क्षमा प्राप्त करने के लिए बाइबल हमें बताती है कि हमें केवल एक काम करना है–जो कुछ उसने क्रूस पर किया उसे स्वीकार करना और उस पर पूर्ण हृदय से विश्वास करना है।

जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी (प्रेरितों के काम 10:43)।

यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे, कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा (रोमियों 10:9)।

आप भी अपने पापों की क्षमा और उनसे छुटकारा पा सकते हैं यदि आप प्रभु मसीह पर विश्वास करें।

निम्नलिखित एक साधरण प्रार्थना है ताकि इससे आपको यह फैसला करने में और प्रभु यीशु मसीह के द्वारा आपके लिए किए क्रूस के कार्य पर विश्वास करने में सहायता कर सके। यह प्रार्थना आपकी सहायता करेगी कि आप यीशु के कार्य को स्वीकार करके अपने पापों की क्षमा और उनसे छुटकारा पा सकें। यह प्रार्थना मात्र एक मार्गदर्शिका है। आप अपने शब्दों में भी प्रार्थना कर सकते हैं :

प्रिय प्रभु यीशु, आज मैंने समझा है कि आपने मेरे लिए क्रूस पर क्या किया था। आप मेरे लिए मारे गए! आपने अपना बहुमूल्य रक्त बहाया और मेरे पापों की कीमत चुकाई ताकि मुझे पापों की क्षमा मिले। बाइबल मुझे बताती है कि जो कोई आप में विश्वास करता है उसे उसको पापों की क्षमा मिलती है।

आज मैं आपमें विश्वास करने और जो कुछ आपने मेरे लिए किया है, उसको स्वीकार करने का फैसला करता हूँ, कि आप क्रूस पर मारे गए और फिर जीवित हो गए। मैं जानता हूँ कि मैं अपने आपको अच्छे कामों के द्वारा नहीं बचा सकता हूँ। मैं अपने पापों की क्षमा कमा नहीं सकता हूँ।

आज मैं अपने हृदय में विश्वास करता हूँ और मुँह से कहता हूँ कि आप मेरे लिए मारे गए। आपने मेरे पापों का दण्ड चुकाया। आप मृतकों में से जीवित हो गए और आपमें विश्वास करने के द्वारा मैं अपने पापों की क्षमा और पाप से छुटकारा प्राप्त करता हूँ।

प्रभु यीशु धन्यवाद। मेरी सहायता करें कि मैं आपको प्रेम कर सकूँ। आपको और अधिक जान सकूँ और आपके प्रति विश्वासयोग्य रह सकूँ। आमीन!

हम अब ऐसे समय में हैं जहां पर विश्वासियों को तैयार किए जाने की और उन्हें "सारे संसार में" – घर, समाज, निगम कार्यालयों, शिक्षा संस्थानों, प्रशासकीय प्रतिष्ठानों में जाने हेतु मुक्त करने की आवश्यकता है, ताकि वे प्रभु यीशु मसीह के कामों को प्रगट करें : प्रेरिताई की सामर्थ में चलें, प्रभु के भविष्यात्मक वचनों को कहें, बीमारों को चंगा करें, दुष्टात्माओं को निकालें, आश्चर्यकर्मों को करें और सुसमाचार से जीवनों को प्रभावित करें। अब समय नहीं है कि विश्वासी आराम की गद्दियों पर बैठकर विश्राम करें या केवल अगुवे सेवा का कार्य करें। परमेश्वर के सभी लोगों को पृथ्वी पर परमेश्वर की इच्छा पूरी करने हेतु समर्थ बनना है।

मसीही सेवक होने के नाते, हमारी ज़िम्मेदारी यह है कि हम इसे होने दें। यह हमारे विषय में नहीं है। यह उनके विषय में हैं – पवित्र जनों के विषय में – परमेश्वर के लोगों के विषय में है!

पृथ्वी पर परमेश्वर की वर्तमान बेदारी के केन्द्र में होकर कैसे परमेश्वर की हर संतान को परमेश्वर का सेवक बनने हेतु सिद्ध बनाएं और मुक्त करें, ताकि मसीह ऐसी मण्डली के लिए लौट आए, जो मज़बूत, सम्पूर्ण और बेदाग एवं बेझुर्री है!

आशीष रायचुर

All Peoples Church & World Outreach
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617, +91-80-65970617
Email: contact@apcwo.org
Website: www.apcwo.org